ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

ओ निज तीरथ तालवो,
जोति सही नित श्याम की।
देव बराबर कोई नहीं,
महिमा घणी मुकाम की।।

आसोज मेले की
हार्दिक शुभकामनाएँ

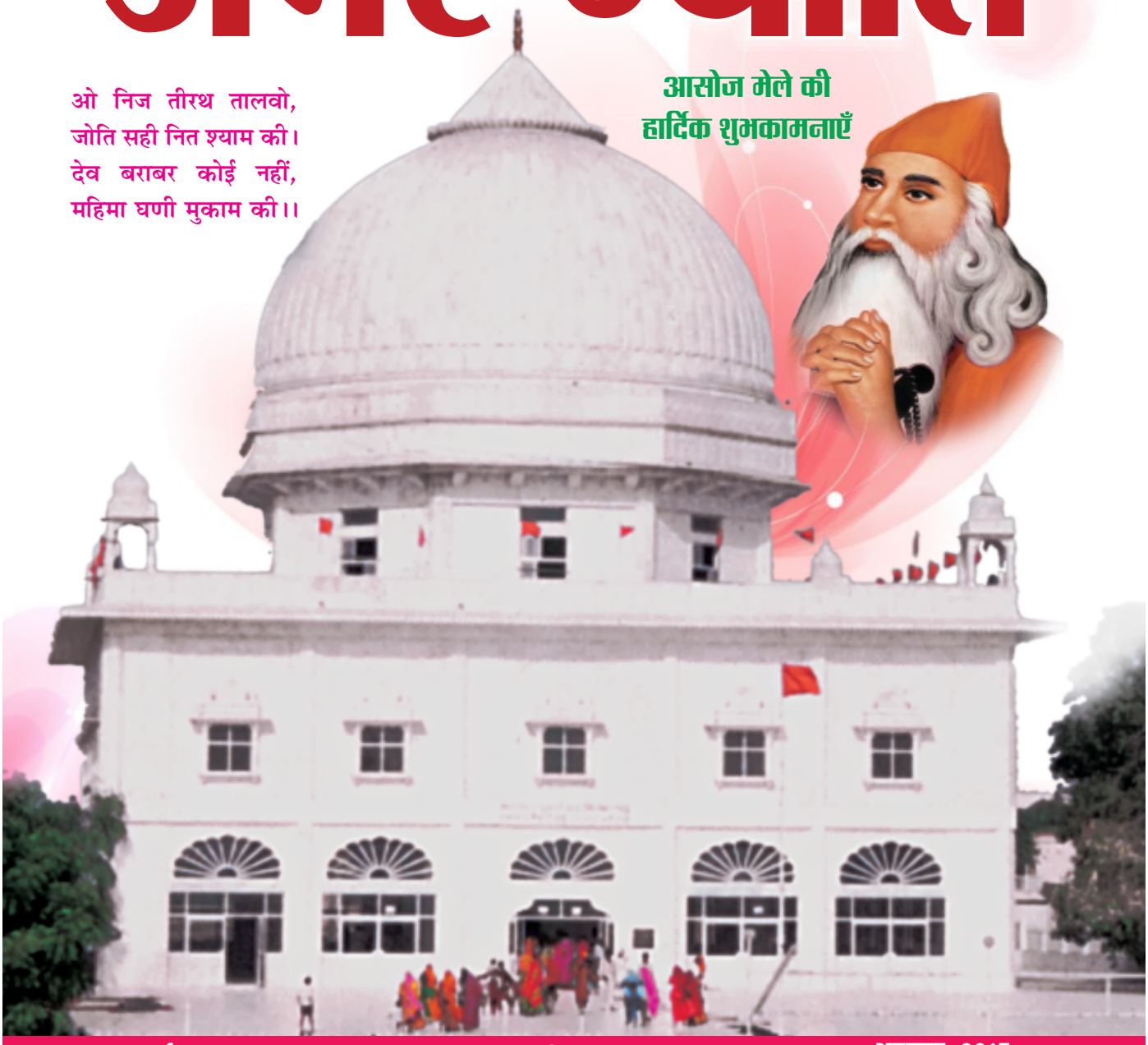

वर्ष : 66 अंक : 10 अक्तूबर, 2015

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक:
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	3
सबद-45	4
साखी 'मुकाम की शोभा'	6
नव अवतार नमो नारायण.....	8
गुरु जाम्भोजी का अवतार एवं जाम्भाणी हरजसकार	10
बिश्नोई धर्म अनुकूल दैनिक जीवनचर्या	12
संभराथल धाम एक नजर में	15
समेलिया जम्भेश्वर मन्दिर: एक ऐतिहासिक धरोहर	17
अमावस्या के व्रत का महत्त्व	18
बधाई संदेश	19
आओ शहीदी दिवस पर प्रण करें...	20
जांबाज सैनिक जगदीश बिश्नोई....	21
मानव मन की शांति का केन्द्र- श्री विष्णुधाम	22
शिकारियों से लड़ते हुए उमाराम जाट ने दिया बलिदान	23
मन की बात	24
संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण	25
युवाओ परिस्थितियों के गुलाम मत बनो	27
जम्भेश्वर वाणी: वेद वाणी भारत की संस्कृति	28
सामाजिक हलचल	29-33
जम्भ चालीसा	34

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय

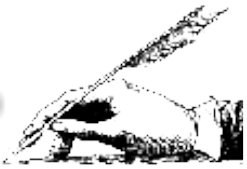

जाम्भाणी मेलेः श्रद्धा व संस्कृति के संगम

मेले जांभाणी संस्कृति ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। यदि इन्हें संस्कृति के पोषक, परिमार्जक और संवाहक कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। पारस्परिक मेल-जोल, धार्मिक और सांस्कृतिक समझ के लिए तो ये मेले सुनहरे अवसर होते हैं। यदि सामाजिक संगठन की दृष्टि से देखा जाए तो मेले सर्वोत्तम माध्यम होते हैं। कहने का अभिप्राय है कि मेले कोई सैर-सपाटे करने के लिए नहीं होते बल्कि इनका उद्देश्य अत्यन्त गहन व बहुमुखी है। बिश्नोई समाज व संस्कृति में मेलों को अत्यन्त ही महत्व दिया गया है। हमारे समाज में यह परम्परा अत्यन्त ही प्राचीन भी है। गुरु महाराज के वैकुण्ठगमन के पश्चात् ही मुकाम का फाल्गुनी मेला प्रारम्भ हो गया था। थोड़े समय बाद वील्हो जी ने मुकाम का आसोजी मेला व जांभोलाव के मेले प्रारम्भ किए। अब तो यह परम्परा बहुत आगे बढ़ गई है। जन्माष्टमी, धर्म स्थापना दिवस, निर्वाण दिवस, खेजड़ली शहीदों मेले के साथ-साथ हर अमावस्या पर स्थान-स्थान पर मेले भरने लगे हैं, परन्तु सबसे विशाल मेले मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुनी और आसोज की अमावस्य को लगने वाले मेले ही हैं जिसमें पूरे भारतवर्ष से लाखों की संख्या में लोग पहुंचते हैं।

निश्चित रूप से मेलों की संख्या के साथ-साथ मेलों में जाने वालों की संख्या भी बढ़ी है। आज प्रचार-प्रसार, यातायात और सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ा है। परन्तु चिन्ता का विषय यह है कि श्रद्धालु बढ़ रहे हैं परन्तु उस अनुपात में श्रद्धा नहीं बढ़ रही है। मेले में जाने वाले श्रद्धालु इन मेलों में निहित गहन उद्देश्यों से अनभिज्ञ होते हैं। इसलिए ये मेले मात्र औपाचारिकता बनने लगे हैं। आज समाज में जो दिखावे का दौर चला है, उसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ रहा है, जबकि श्रद्धास्थल किसी आत्मप्रदर्शन का नहीं अपितु आत्मावलोचन का स्थान होता है।

आत्मानुशासन किसी भी मेला व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु पिछले कुछ समय से यह लुप्त होता दिखाई दे रहा है। और तो और यज्ञ में आहुति देते समय भी हम संयम व धैर्य नहीं रखते। एक-दूसरे के ऊपर से घी नारियल को फैंक-फैंक कर यज्ञ में डालते हैं। भगवान का ऐसा अपमान शायद ही कहीं और दिखाई दे। इससे एक-दूसरे के कपड़े भी खराब करते हैं। मेले में हम किसी तरह घी-नारियल को यज्ञ की ज्वाला तक पहुंचाना ही अपना कर्त्तव्य मानते हैं उसके पश्चात् पूरा दिन इधर-उधर की बातें करते हैं, धार्मिक-सामाजिक चर्चा व कार्यक्रमों में आज किसकी रूचि है?

कुछ इसी तरह के अधैर्य और असंयम का परिचय हम भंडारे व विभिन्न संगठनों के कार्यक्रमों में देते हैं जो गहन चिन्ता का विषय है। यदि समय रहते हमने इन सब बातों को गंभीरता से नहीं लिया तो हमारे इन मेलों का मूल स्वरूप विकृत हो जाएगा और इनकी सार्थकता पर भी प्रश्न चिह्न लग जाएगा। आओ हम इसी आसोज मेले से संकल्प लें कि मेले में हम उसी भावना से जाएंगे जिस भावना से हमारे पूर्वजों ने इन्हें प्रारम्भ किया था।

सबद–45

दोहा–

लोहा पांगल यों कहै, मेरे है यह चित।
लोह झड़ै मम काछ का, तो आवै प्रतीत।
मेरे सतगुरु यों कह्यो, लोह झड़ै तुम तात।
सोवनी नगरी प्रगटे पुरुष, तब आवै तोहै शांत।

लोहा पांगल ने इस प्रकार से कहा कि हे देव! मेरा यह विचार था कि मुझे महापुरुष कोई मिलेगा तो मेरा यह लोहे का कच्छ झड़ जायेगा। ऐसा ही मेरे सतगुरु ने आदेश भी दिया था। इस सोवन नगरी सम्भराथल पर ही प्रगट होने का संकेत था। किन्तु अब मुझे निरासा हो रहा है क्योंकि मेरा यह लोहे का कच्छ अब तक टूटा क्यों नहीं है। इसलिये आपके विषय में भी मेरा ऐसा ही संदेह हो रहा है। आप इसका निवारण कीजिये। जम्भदेवजी ने इस प्रकार से कहा–

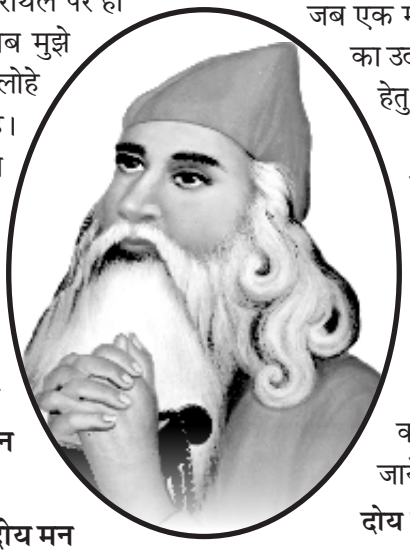

सबद–45

ओ३म् दोय मन दोय दिल सिवी न कंथा, दोय मन दोय दिल पुली न पंथा।

दोय मन दोय दिल कही न कथा, दोय मन दोय दिल सुणी न कथा।

भावार्थ– 'संकल्प विकल्पात्मक मन', मन का स्वभाव संकल्प तथा विकल्प करना है। जब तक मन एक विषय पर स्थिर नहीं होगा तब तक कोई भी कार्य ठीक से नहीं हो सकेगा तथा इसके साथ साथ दिल अर्थात् हृदय में जब तक कोई बात स्वीकार नहीं होगी तब तक वह कभी भी कुशलता से परिपूर्ण नहीं हो सकता। इस बात को लोहापांगल के प्रति बतला रहे हैं।

दोय मन तथा दोय दिल से किया हुआ कार्य गुदड़ी की सिलाई का कार्य भी ठीक प्रकार से नहीं हो सकता। उसी प्रकार से द्विविधा वृत्ति से अचेतनावस्था में तो मार्ग भी पथिक भूल जाता है तथा दोय मन तथा दोय दिल से कथाकार कथा भी नहीं कह सकता और न ही श्रोता लोग श्रवण ही कर सकते।

दोय मन दोय दिल पंथ दुहेला, दोय मन दोय दिल गुरु न चेला।
दोय मन दोय दिल बंधी न बेला, दोय मन दोय दिल रब्ब दुहेला।

दोय मन दोय दिल से तो पन्थ भी दु:खदायी हो जाता है क्योंकि पन्थ पर चलना चाहता नहीं जबरदस्ती चलाया जा रहा है। गुरु तथा शिष्य भी एकता बिना न तो गुरु ज्ञान ही दे सकता और न ही शिष्य ले ही सकता है। जब एक मन तथा एक दिल होगा तभी प्रेम श्रद्धा का उदय होगा और यही ज्ञान ग्रहण करवाने में हेतु है।

एकाग्रता के विना समयानुसार उठना, बैठना, चलना, कार्य विशेष करना भी नहीं हो सकेगा अर्थात् नियमित जीवन नहीं जी सकेगा। दुविधा वृति से तो परमात्मा का स्मरण भी नहीं हो सकेगा। यदि हठात् माला लेकर बैठ भी जायेंगे तो वह आनन्द दाता परमात्मा का स्मरण नहीं होगा किन्तु दु:खदायी हो जायेगा।

दोय मन दोय दिल सूई न धागा, दोय मन दोय दिल भिड़े न भागा।
दोय मन दोय दिल भेव न भेऊं, दोय मन दोय दिल टेव न टेऊं।

मन तथा दिल इन दोनों की एकता–शांति बिना तो सूई में धागा भी नहीं पिरोया जा सकता तथा योद्धा लोग भी युद्ध के मैदान में पहुंच जाते हैं परन्तु जब तक घर, स्त्री, परिवार की मोह माया में वृति लगी है तब तक न तो वे ठीक प्रकार से युद्ध ही कर सकते और न ही भाग सकते। बीचों–बीच में पड़कर जीवन को नष्ट कर लेते हैं। एकाग्र वृत्ति के बिना तो किसी प्रकार का रहस्य भी नहीं जाना जा सकता और न ही व्यवहार में किसी के मन की बात उसका भेद विचार ही जाना जा सकता तथा उसी प्रकार से

ही द्विधा वृत्ति यानि द्वेष भाव से न तो आप किसी को प्रेम भाव से सेवा कर सकते और न ही किसी से करवा ही सकते।

दोय मन दोय दिल केल न केला, दोय मन दोय दिल सुरग न मेला।

कुछ समय के लिये मनोरंजन के लिये खेल भी द्विविधा वृत्ति से अर्थात् निश्चित हुए बिना नहीं खेला जा सकता और न ही खेल में आनन्द आयेगा तथा यदि स्वर्ग या मुक्ति चाहते हो तो भी एकाग्रता की परम आवश्यकता है। केवल लोक प्रतिष्ठा के लिये हाथ में माला या आसन मुद्रा से तो द्विविधा वृत्ति बनी रहती है। उससे यह जीवन दु:खमय होकर रह जायेगा, न तो स्वर्ग है और और न ही परमात्मा से मिलान ही संभव है।

रावल जोगी तां तां फिरियो, अण चीन्हैं के चाह्यो।
काहै काजै दिसावर खेलो, मन हठ सीख न कायों।

हे जोगियों के रावल! तुम लोग कहां-कहां भटके हो तथा क्यों भटके हो, क्या चाहते हो, यदि कुछ बिना साधना स्मरण जप तप के ही केवल निरंतर भ्रमण द्वारा ही सभी कुछ चाहते हो तो यह तुम्हारी बड़ी भूल होगी। किसलिये दिशावरों में जाकर पाखण्ड का खेल रचते हो, यह शरीर यात्रा तो बिना पाखण्ड के ही चलती रहेगी। तुम्हें भ्रमण काल में भी किसी गुणी सतगुरु के पास बैठकर सीख पूछनी चाहिये थी किन्तु तुमने मन के हठीले स्वभाव के कारण कभी भी किसी से भी अच्छी सीख नहीं पूछी तो फिर भटकना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ।

थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या, गुरु न चीन्हों रायों।
कण विन कूकस कांये पीसों, निश्चय सरी न कायों।

न तो आप लोगों ने योग को ही पूर्णतया सिद्ध करके योगी बन सके और न ही पूर्णतया ही भोग ही भोग सके तथा गुरु की शरण ग्रहण करके परमात्मा विष्णु का स्मरण एवं भक्ति भी नहीं कर सके तो तुम्हारा यह अमूल्य जीवन कण-धान से रहित कूकस को ही पीसता है। उस भूसे से ही धान निकालता रहा, ऐसा क्यों किया? निश्चित ही तुम्हारा कार्य सिद्ध नहीं होगा अर्थात् न तो तुम भूसे के अन्दर से धान ही निकाल सके और न ही इस साधन रहित भ्रमणशील जीवन से ही कण तत्व की प्राप्ति हो सकेगी।

बिण पायचियें पग दुख पावै, अबधूं लोहै दुखी सकायों।
पार ब्रह्म की सुद्ध न जांणी, तो नागे जोग न पायो।

हे अवधू! तुमने पावों में जूते नहीं पहन रखे हैं, इनके बिना तुम्हारे पैर दु:ख पा रहे हैं। यही इस मिथ्या त्याग का फल है और तुम्हारा लोहे से निर्मित कच्छ भी कम दु:खदायी नहीं है। फिर अपने को सिद्ध किस आधार पर कहते हो। योगी या सिद्ध भी क्या कभी दु:ख का अनुभव करता है क्या? जब तक परब्रह्म परमात्मा की सुधी निरंतर नहीं रहेगी तब तक नंगे रहने से कोई योगी नहीं बन जाता है।

साभार - जम्भसागर

जम्भदेव से अर्जी

जम्भगुरु मेरे हृदय के पट खोल दे,
एक बार मुझको तू अपना भक्त बोल दे।
इस झूठे जग की माया से हो गया परेशान,
लेकिन तुझको पाना उतना ही आसान,
मेरे लिए अब अपनी बांहे खोल दे,
एक बार मुझको तू अपना भक्त बोल दे।
हर पल हर घड़ी जुबां पे नाम है तेरा,
करके कृपा करदे उद्धार प्रभु मेरा,
अपनी दिव्यशक्ति से भ्रम सब तोड़ दे।
एक बार मुझको तू अपना भक्त बोल दे।
तू दयालु तू पालनहार है जग में बड़ा,
है नहीं कोई फिक्र, तू साथ जो खड़ा,
रिश्ता अपना तू और गहरा जोड़ दे,
एक बार मुझको तू अपना भक्त बोल दे।

❐ **श्रवण देहडू सुपुत्र श्री ओम प्रकाश**
गांव सेनीवास, जिला भिवानी
हरियाणा, मो. 8684855714

केसो जी कृत साखी छन्दा की 'मुकाम की शोभा'

ओ निज तीरथ तालवो, जोति सही नित श्याम की।
देव बराबर कोई नहीं, महिमा घणी मुकाम की।
महिमा तो घणी मुकाम सोहे, पेड़ियां पग दीजिये।
झलरां जमाती छांजा, देख रचना रीझिये।
होम जप जश जहां कीजै, ध्याविये पूरो धणी।
जिसो ध्यावै तिसो पावै, तालवो तीर्थ सही।1।
चोकी बणी मुकाम की, श्याम सपेत पीली बणी।
कारीगर मेल मिली, छीट वरणी अति सोहवणी।
वणी चोकी मंझ तीर्थ, ज्ञान चर्चा अति घणी।
जहां करै चोहलर पंछियां, मुकुट शोभा भली बणी।
चौतरे अति चूंप दीसै, भूरज शोभा अति घंणी।
गुगल की महकार आवै, चोतरे चोकी बणी।2।
खिड़की पालक देहरे, सूल सदा अति सोहणी।
हरि हजूर दीसे भली, थिरकी थानि सुहावणी।
थिरकी थांनी सुहावणी नै, जहां चांदणी चहुं दिशा।
झलके जंजीर देव सुरगां, जोति जहां विसो विसां।
छा जातो छाजै ताल बाजै, काज हरि सेयां सरे।
दीसै अति सुहावणी, खिड़की खालक बारणे।3।
कली विराजे कांगरा, सोभा मुकुट बखाणिये।
रूंखां बलि रलि आंवणां, श्याम सही जित जाणिये।
जाणिये जित श्याम सतगुरु, पात हरि जन पेखणां।
इण्डो तो मुकुटि मुकाम सोहे, देव दरगे देखणां।
कलश अरू त्रिशूल झलकै, भांत हरि मेले मिली।
देख शोभा कहे केशो, कांगरे सोहै कली।4।

भावार्थ- यह अपना तीर्थ तालवा मुकाम है जहां पर विष्णु श्याम सुन्दर की ज्योति जगमग हो रही है। देव के जैसा और दूसरा गुरु कोई दिखाई नहीं देता उन्हीं देव का अन्तिम मुकाम ही यह मुकाम है जिसकी महिमा बहुत ही अधिक है। अपनी महिमा से मुकाम शोभायमान हो रहा है। सर्वप्रथम दर्शन के लिये पेड़ियों पर पैर दीजिये। जब पैड़ी पर पैर देकर आगे बढ़ेंगे तो आप नीचे झुककर ही आगे बढ़ पायेंगे। सर्व प्रथम आप मन्दिर के झुके हुए छाजे के दर्शन करेंगे। वैसी दिव्य रचना को देखकर प्रसन्न होइये। वही छाजे के नीचे बैठकर हवन करें। तथा पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर का ध्यान करें। जैसा ध्यान करेंगे फल भी वैसा ही प्राप्त होगा, ऐसा दिव्य तीर्थ मुकाम तालवा मानें।1। मन्दिर के चारों तरफ चौकी बनी हुई है जो श्वेत श्याम एवं पीले रंग के पत्थरों से बनी हुई है। चतुर कारीगरों द्वारा पत्थरों की जोड़ाई की गई है। जिससे चित्र विचित्र रंगों में शोभायमान हो रहे है। इस प्रकार से तीर्थ

के मंझ में चौकी बनी हुई है। जहां ज्ञानी भक्तजन बैठकर ज्ञान चर्चा कर रहे है, वहीं चौकी के चारों तरफ वृक्षों पर बैठे हुए पक्षी भी मानों ज्ञान चर्चा करते हुए किलोल कर रहे है। मन्दिर के मुकुट की शोभा तो देखते ही बनती है। चबूतरे पर बहुत सारी चूंप चमक दमक दिखाई देती है। सम्पूर्ण मन्दिर एक गढ़ की भांति दिखाई देता है। वहीं पर हवन में होमे गये गूगल की महकार आ रही है। इस प्रकार से चौतरे की चौकी बनी हुई है।2। चारों तरफ जंगलों की खिड़कियां तथा मुख्य द्वार के किवाड़ों पर सुरक्षा की दृष्टि तथा सुन्दरता के लिये सूल लगाई गई है वे अति शोभायमान हो रही है। निज मन्दिर के अन्दर हरि स्वयं ही मानों समाधी के रूप में दिखाई देते है ऐसा सदा ही स्थिर रहने वाला थान समाधी शोभायमान हो रही है। ऐसे दिव्य थान पर चारों तरफ से सूर्य की किरणें आकर प्रकाश करती है। इसी प्रकार से चांदनी रातों में भी चारों तरफ से चांदनी आकर दिव्य आलोक से समाधी जगमग हो उठती है। उस समय ही शोभा देव स्थान स्वर्ग की शोभा से भी कहीं अधिक होती है। मन्दिर में सदा ही अडिग ज्योति रहती है। इसलिये शत प्रतिशत स्वर्ग का ही देव स्थान है। प्रात: सांय आरती के समय में ताल मृदंग घंटे घड़ियाल शंख आदि बजते है। हरि की प्राप्ति हेतु भक्त जन सेवा करते है। इस प्रकार से खिड़की द्वार आदि अति शोभायमान होते है जो मन को मोहित कर देते है।3। मन्दिर के अन्दर पत्थरों की सूक्ष्म खुदाई करके जो कांगरे उकेरे गये है, दिव्य चित्रकारी की गई है वह तो अनुपम ही है। मुकुट की शोभा तो वह कलाकारी ही बता रही है। ऐसे दिव्य भवन में अन्तिम मुकाम श्री देव ने किया है देवजी पहले कभी वृक्षों के नीचे ग्वाल बालों के साथ विश्राम किया करते थे। वही श्याम आज यहीं मन्दिर में समाधी के रूप में विद्यमान हुए है। यहीं पर श्याम सतगुरु को जानकर हरि के भक्तजन पवित्र भावना से वहां दर्शन करके जीवन को सफल बनाये। ऐसा दिव्य मन्दिर हरि के अनुरूप ही बना है। मन्दिर के मुकुट पर स्वर्ण कलश चढ़ाया गया है जो अति सुन्दर है, मन्दिर की सुन्दरता को और आगे बढ़ा रहा है। कलश उपर उठा हुआ मालूम पड़ रहा है मानों देव को स्वर्ग में देख रहा है और यहां पर भक्तों को संदेशा दे रहा हो। इस प्रकार से मन्दिर का कलश तथा त्रिशूल मिलकर श्याम पीत रूप से झिलमिल हो रहे है। अनेक भांति के लोग मेले में आकर एकत्रित होते है। शोभा देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे है। केशोजी कहते है कि शोभा देखते है जो मन्दिर के कंगारों के रूप में विद्यमान है।4।

साभार - साखी भावार्थ प्रकाश

संभराथल तलहटी

"परलोक का प्रछन्न कपाट" गुरु जाम्भोजी द्वारा बिश्नोई पंथ प्रवर्त्तन की पवित्र वसुधा, मृदु मृदास्तूप का स्वर्णिम सा पावन शीर्ष-संभराथल। इसी ऐतिहासिक बालूका-शिखर के पूर्वोत्तरीय भौगोलिक ढलान-तट में अवस्थित है संभराथल तलहटी। 'हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी' मरु के शुष्क वानस्पतिक आंगन में, अदम्य जीवट के पादप, कंकेहड़ी की मनोरम शृंखला के मध्य छोटी सी जलाशयनुमा संरचना। प्रचलित किंवदती के अनुसार इसी स्थान पर "पूल्होजी नै प्रभु स्वर्ग दिखाए" जांभोजी ने अपने प्रारंभिक अनुयायियों का साक्षात्कार, स्वर्ग दृश्यों से कराया था। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार यहीं पर ही, गुरु जी ने बेमौसम वर्षा का दिव्य व चमत्कारिक प्रयोग मानव कल्याण हेतु किया था- "बिन बादल प्रभु इमिया झुरायै" दुर्भिक्षपीड़ित जनसमुदाय के मालवा पलायन को रोकने हेतु अन्न-जल का प्रबंध इसी तलहटी में हुआ था। आज भी आस्थावान श्रद्धालु, मुकाम- समराथल तीर्थयात्रा के समय, स्वर्गारोहण का स्वप्न- अभिलाषा मन में संजोए, इस पवित्र तलाई से मृदा उत्खनित कर, श्री गुरु के आसन समराथल शिखर पर अर्पित करते हैं। वस्तुत: महान् दिव्यात्मा गुरु जांभोजी के प्रति, अगाध श्रद्धा व अटूट आस्था देखिए, बाल-तरुण-वृद्ध नर-नारियों का श्रद्धासिक्त जनसैलाब-पीठ पर पवित्र मृदा की पोटली लिए, दुरुह-दुर्गम सा उर्ध्वाधर आरोहरण कर, सपरिश्रम-सोत्साह शिखर पर पहुँच, एकाकार की अनुभूति में मंत्रमुग्ध हो जाता है। तलहटी की अलौकिक मृदा से भाल-तिलक का जी चाहता है।

❐ **शंकर बिश्नोई**
भोजाकोर (फलौदी) मो. 9413509229

नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं।
अवतारवाद तथा जम्भवाणी

गतांक से आगे....

परशुराम के अर्थ न मूवा, ताकी निश्चै सरी न कायो।[24]

परशुराम जी भगवान् विष्णु के ही अवतार थे। उन्होंने इस संसार में अनेकानेक आश्चर्य जनक कार्य किए थे, अपने जीवनकाल में ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व दोनों धर्मो को एक साथ पूर्णता से निभाया।

सबद 29 में कृष्णावतार का उल्लेख निम्नानुसार है-

कृष्णी मया चौखण्ड कृषाणी, जम्बू दीप चरीलो।
जम्मू दीप ऐसो चर आयो, इसकन्दर चेतायो।
मान्यो शील हकीकत जाग्यो, हक की रोजी धायो।[25]

परमात्मा श्री कृष्ण की त्रिगुणात्मिका माया का ही यह दृश्य, अदृश्य जगत रूप है एक बीज रूपी माया का यह जगत पसारा है। किन्तु इसके कृष्ण स्वयं परमात्मा हैं। श्री देवजी कहते हैं कि इस विशाल सृष्टि के अन्दर भ्रमण करते हुए भी मैं यहाँ विशेष रूप में ही विचरण करता हूँ तथा इसमें विचरण करते हुए दिल्ली के बादशाह सिकन्दर को चेताया है। उसे अधर्म मार्ग से निवृत्त करके शील व हक की कमाई का उपदेश दिया है। अब वह हक की कमाई करके ही अपना जीवन निर्वाह करता है।

सबद 29 में ही नृसिंह अवतार का उल्लेख है। भगवान् जम्भेश्वर की यही पीड़ा बार-बार जम्भवाणी में प्रकट होती है कि अभी उन्हें शेष बचे हुए बारह कोटि जीवों का उद्धार करना है। इस सबद में जम्भवाणी का उद्घोष है-

तेतीसां की बरग वहां म्हे, बारा काजै आयो।
बारा थाप घणा न ठाहर मतांतो डीले कोड़ रचायों, म्हे ऊंचे मण्डल का रायो।[26]

सतयुग में प्रह्लाद भक्त के समय में तेतीस करोड़ देवी-देवताओं का उद्धार करने के लिए भी मैंने ही नृसिंह रूप धारण किया था। उसको दैत्यों के त्रास से मुक्ति दिलवाई थी। सतयुग में तो केवल पाँच करोड़, त्रेता में सात, द्वापर में नौ करोड़ का ही उद्धार हो सका, अब कलयुग में उनसे बचे हुए बारह कोटि जीवों का उद्धार करके ज्यादा दिन नहीं ठहरुँगा। यहाँ पर आने का मुख्य प्रयोजन पंथी जीवों का उद्धार करना ही है।

फैरी सीत लई जद लंका, तद म्हे ऊथे थायो।
दससिर का दश मस्तक छेद्या, बाण भला निरतायो।[27]

त्रेता युग में जब राम रूप हो करके दशसिर रावण के दशों सिरों को छेदन अच्छे अच्छे नुकीले बाणों द्वारा किया। उस समय दोनों ओर से बाणों का महान् नृत्य हुआ था। उन्हीं बाणों द्वारा रावण को मार करके सीता को वापिस लाये तथा लंका को अपने अधीन किया था। उस समय कुछ समय के लिए लंका में ही रहना पड़ा था।

कंसा सुर सूं रमिया, सहजै नंद हरायो।[28]

इसी प्रकार द्वापर में भी कंस असुर के साथ मैंने वैसा ही खेल किया था। बिना खेल किए आनन्द नहीं

नरसिंह नर नराज रवां, सुराज सुखो, नरां नरपति सुरां सरपति।[32]

जब नृसिंह अवतार हुआ था, वह तो नरों में श्रेष्ठतम, देवताओं में शूरवीर, मनुष्यों का राजा, देवताओं के भी देवता थे। उन्होंने हिरण्यकश्यपु को मार डाला था। उसी समय प्रह्लाद को तेतीस करोड़ देवी-देवताओं के उद्धार का वचन दिया था।

ज्ञान न रिंदो बहुगुण चिंदो, पहलू प्रहलादा आप पतलीयों।
दूजा काजै काम बिटलीयो, खेत मुक्त ले पंच करोड़ी।[33]

परमात्मा विष्णु ने प्रथम तो प्रह्लाद को अति कष्ट सहन करवाया था हिरण्यकश्यपु से अत्याचार द्वारा प्रह्लाद की परीक्षा करवायी जब परीक्षा में प्रह्लाद सर्वगुण सम्पन्न, ज्ञानवान, परोपकारी, सिद्ध हो गया तभी विष्णु परमात्मा ने नृसिंह के रूप में दर्शन दिया तथा तेतीस करोड़ के उद्धार का वचन दिया। जिनमें पाँच करोड़ उसी समय प्रह्लाद के साथ ही पार हो गए। प्रह्लाद भक्त ने स्वयं का तथा अपने साथियों का भी उद्धार किया।

म्हे शिम्भू का फरमाया आया, बैठा तखत रचाई।
दो भुज डंडे परबत तोला, फेरा आपण राई।[34]

गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि मैं तो स्वयंभू हूँ। सतयुग में नृसिंह अवतार धारण करके प्रहलाद को वचन दिया था, उसी वचन को निभाने के लिए यहाँ पर सम्भराथल पर तखत यानि आसन लगाया है। इसी आसन पर बैठकर प्रहलाद पंथ के बिछुड़े हुए जीवों को वापिस ले जाऊँगा, क्योंकि वे अपने भक्त प्रह्लाद के अनुयायी जीव होने से अपने ही हैं। यदि मैं चाहूँ तो इन मेरी दो भुजाओं से पर्वत को तोल सकता हूँ अर्थात् यदि मैं चाहूँ तो सम्पूर्ण संसार के प्राणियों को पार उतार सकता हूँ। इन्हें तोलकर तो मैं नित्य प्रति देखता हूँ कि किसमें कितने अवगुण भरे हुए हैं तथा कितने गुण भरे हुए है।

अपने नौ अवतारों के संबंध में भगवान् जम्भेश्वर जी सबद 94 में उद्घोषित करते हैं-

तद म्हे रूप कियो मैनावति यो, सत्यव्रत को ज्ञान उचारी।
तद म्हे रूप रच्यो कामठियो, तेतीसों की कोड़ हंकारी।[35]
जब मैं रूप धर्‌यो बाराही, पृथिवी दाढ़ चढ़ाई सारी।

नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्‌यो, प्रहलादो रहियो शरण हमारी।[36]

बावन होय बलिराज चितायो, तीन पैण्ड कीवी धर सारी।
परशुराम होय क्षत्रियपन साध्यो, गर्भ न छूटी नारी।[37]
श्री राम शिर मुकुट बंधायो, सीता के अहंकारी।
कन्हड़ होय कर बंसी बजाई, गऊ चराई।
धरती छेदी काली नाथ्यो, असुर मार किया क्षय
बुद्ध रूप गयासुर मार्‌यो, काफर मार किया बैगारी।
पन्थ चलायो राह दिखायो, नौ बर विजय हुई हमारी।[39]

समग्र रूप से जम्भवाणी का अवगाहन करने पर यह स्पष्ट होता है कि भगवान् जम्भेश्वर ने स्वयं पृथ्वी पर नौ अवतार लिए तथा दसवें अवतार अर्थात् कल्कि अवतार के स्थान पर वे स्वयं विष्णु रूप में अवतरित हुए। सबद 85 में यह वाणी उद्‌घोषित हुई है,

नव खेड़ी म्हे आगे खेड़ी दशवें कालंके की बारी।
उतम देश पसारो मांड्यो, रमण बैठो जुवारी।
एक खण्ड बैठा नव खण्ड जीता, को ऐसो लहो जुवारी।[40]

जम्भवाणी से यह भी स्पष्ट होता है कि भगवान् जम्भेश्वर के अनुयायी वास्तव में भक्त प्रहलाद की परम्परा के ऐसे विष्णु के उपासक हैं, जो अपने उद्धार की राह इस युग में जोह रहे हैं क्योंकि भगवान् जम्भेश्वर ने सतयुग में नृसिंह का रूप धारण कर अपने भक्त प्रहलाद को यह वचन दिया था कि वे उनके बिछड़े हुए तैतीस करोड़ जीवों का उद्धार करेंगे। अभी तक वे इक्कीस करोड़ का उद्धार तो कर चुके अब शेष बारह करोड़ हैं जिनका उद्धार करना है। अत: नृसिंह अवतार इस पंथ के अनुयायियों का प्रमुख अवतार है तथा भगवान् जम्भेश्वर के भक्त इस युग में प्रतीक्षा कर रहे हैं, अपने उद्धार की।

इस प्रकार जाम्भाणी में अवतारवाद की अवधारणा एक मौलिक अवधारणा है तथा दशावतार के संबंध में ऐसी अवधारणा किसी अन्य पंथ में नहीं है। जाम्भाणी में भगवान् जम्भेश्वर ने स्वयं दसों अवतार लेने का उद्‌घोष किया है तथा कल्कि के स्थान पर स्वयं विष्णु रूप में उन्होंने जन्म लिया है। वे अवतारवाद के इस आख्यान में जहाँ एक ओर ब्रह्म की निर्गुण उपासना का आह्वान करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे सगुण उपासना के स्वरूप का भी वर्णन करते हैं। इस अवधारणा में वे ऐसी विष्णु की परम सत्ता की भी व्याख्या करते हैं, जो सर्वव्यापी है, दीप्तिमय है तथा सूर्य और चन्द्र जिसके दो नेत्र हैं।

इस अवधारणा की परिधि में मनुष्यता है। ऐसी मनुष्यता जो ऐसे सच्चे विष्णु के उपासक का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे तीर्थों को कहीं नहीं खोजने जाना है। जो उनके दर्शन अपने स्वयं के हृदय में कर सकता है और जो अपनी पहचान सच्चे बिश्नोई के रूप में रचकर विष्णु को प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. संस्कृत हिन्दी शब्दकोष-वामन शिवराम आप्टे-पृष्ठ 125-126
2. Introduction to world religions by christopher Huge Partridge-Page-148
3. संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश वामन-शिवराम आप्टे पृष्ठ-1036
4. ऋग्वेद 1, 90 9 आठ, 39, 5, दस, 1 आदि
5. Mc Crindle-The invasion of India by Alexander the great-page 208-209
6. Archaeological survey of India report-1908-09 Page 126
7. Vaisnavism Shaivism and minor religious systems; p.3.-by Dr. R.G. Bhandarkar
8. Religious beliefs and practices of North India during the early mediaeval period-vidbhuti Bhushan Mishra Page 169 (An Article)
9. Introduction to the Pancaratra and the ahirbudhnya samhita Schrader, Friedrich otto-Page 42
10. Hindu Avatar and Christian Incarnation: A comparison-Seth, noel page 52
11. श्री चैतन्य रचितामृत-20, 322
12. राधा-माध्स रंग रँगी (गीत गोविन की सरस व्याख्या)-डॉ. विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ 43-58
13. जम्भसागर-टीकाकार-कृष्णानंद आचार्य पृष्ठ-विष्णु-पृष्ठ 45, 57, 65, 72, 75, 85, 86, 89, 90,116, 138, 145, 148, 150, 151, 157, 172, 175, 176, 205, 215, 216, 226, 227, 228, 239, 241, 246-कृष्ण- 47, 48, 49, 75, 76, 89, 90, 121, 122, 123, 150, 151, 229
14. हिन्दी साहित्य की भूमिका-पृष्ठ 68-69-आचार्य हजारी प्रसाद ग्रंथावली-3
15. जम्भसागर-टीकाकार-कृष्णानंद आचार्य पृष्ठ 22
16. वही-पृष्ठ 56; 17. वही- पृष्ठ 234; 18. वही- पृष्ठ 31; 19. वही-पृष्ठ 117; 20. वही-पृष्ठ 150-151; 21. वही-पृष्ठ 133; 22. वही- पृष्ठ 151; 23. वही- पृष्ठ 206; 24. वही-पृष्ठ 206; 25. वही-पृष्ठ 37; 26. वही-पृष्ठ 37; 27. वही- पृष्ठ 75; 28. वही- पृष्ठ 77; 29. वही- पृष्ठ 77; 30. वही- पृष्ठ 77; 31. वही- पृष्ठ 78; 32. वही- पृष्ठ 122; 33. वही- पृष्ठ 122; 34. वही- पृष्ठ 123; 35. वही- पृष्ठ 123; 36. वही- पृष्ठ 207; 37. वही- पृष्ठ 207; 38. वही- पृष्ठ 208; 39. वही- पृष्ठ 208; 40. वही- पृष्ठ 209; 41. वही- पृष्ठ 189।

- नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
श्री ब्रजमोहन जी उपाध्याय
इन्दिरा गांधी वार्ड, जैन धर्मशाला के पास
हरदा-जिला-हरदा (म.प्र.)पिन-461331

गुरु जाम्भोजी का अवतार एवं जाम्भाणी हरजसकार

गतांक से आगे...

कवि सुरजनजी पूनियां (वि.सं. 1640-1748) के अड़तालीस हरजस मिले हैं। ये बड़े धीर गम्भीर हरजस हैं जिनमें गहन आध्यात्मिक ज्ञान है। इन्हें हरजस सम्राट कहें तो भी कोई अतिश्योक्ति न होगी। उन्होंने अपने हरजसों में विष्णु स्मरण पर बल दिया। उनके कुछ हरजस देखें-

भजि मन विसन हरि विसराम।(21)

मन मेरे विसन नांव नहीं लिया, तातै कहा बोहत दिन जिया। (26)

विसन सिंवरि मन विसन सहाई, विसन सिंवरि तिहूंलोक वडाई। (30)

विसन स विणज करौ मेरा भाई, या तन कीजै पीठ वणाई। (31)

हरे विसन हरे विसन हरे विसन हरे, विसन सिंवरि तिंहू लोकां तरे। (47)

उनका एक हरजस देखिये, जिसमें विष्णु के सभी अवतारों का वर्णन है। भगवान जम्भेश्वर जी भी वही विष्णु अवतार हैं।

सिव मछ कछ वाराह नारयस्यंघ, बावन परसराम बुध वणै।
न कियो किसन कियो झंभेसर, जीवतै सुरग दिखाळ्या जणै॥1॥
गोरख दत मछंद्र गायो, सिध अवतार विचारे सोय।
सुरनर साध विगर्‌य झांभेसर, काया जीती न आयो कोय॥2॥
त्रिगुण रूप रखे हुइ त्रासति, आसति देखि करण हू आस।
दोन्यौ दीन किया एक दावै, विसन लियौ संभराथळि वास॥3॥
पांचूं तंत न हूंता परगट, स हूवै वेद न जाणै सार।
हूंतौ तूं वैण्य जवण्य तदि हूंतौ, सतगुर पंथ चलावणा हार॥4॥
साधां देवण सुधारस भोजन, महमां अनंत वधारण मान।
सुरजनदास सही ओ सतगुर, दतगुर करण अमर चौ दान॥5॥ (43)

कवि मिठुजी (वि.सं.1650-1750) ने अपने हरजस में कहा है-

कुंण तारै जी मोकूं कुण तारै, बिनां गुरु झंभ कहो कुण तारै।

इसी तरह कवि माखणजी (वि.सं. 1650-1750) ने अपने हरजस में बताया है कि राम, कृष्ण एवं जाम्भोजी एक ही है-

अवगतिनाथ अजोध्या के पति, तम ही व्रजपति नंद कंवारा।
अब संभरथळि आए सामी, नव खण्ड प्रथमी खेल पसारा।

कवि देवोजी (वि.सं. 1700-1780) अपने हरजस में कहते हैं कि-

सतगुरु आयौ रळीयै रळीयै, कुण नेंम व्रत लियौ आ थळीयै।

कवि हरिनन्द ने अपने हरजस में गुरु जाम्भोजी के परचों का वर्णन किया है जो अपार हैं-

विडद किसा दे गाऊं।
इण अवतार प्रवाड़ा कीन्हा, पहला पार न पाऊं।

कवि रासानन्दजी (वि.सं. 1700-1780) के दस हरजस मिलते हैं जिनमें विष्णु के अवतारों का वर्णन है। विशेषकर जाम्भोजी के विष्णु रूप का वर्णन है। वे स्वर्ण नगरी संभराथल पर विराजमान हैं। उनके हरजसों की कुछ पंक्तियां देखिये-

संभराथळि गुरु हाट पसारयो। (1)
सोवन नगरी आय विराजै, दरसन दीठै पातिग भाजै। (2)
ऊंच नीच अंतर नहीं कोई, हरि कूं भजै स हरि का होई। (9)

कवि मुकनदासजी (वि.सं.1710-1790) का एक हरजस मिलता है जिसमें उन्होंने गुरु जाम्भोजी के संभुरूप, कैवल्य अवतार को सात्विक रूप में प्रकट किया है, देखें-

जोगी जत धारे आप मुरारे, संभु रूप ज झंभ थियौ।

परमानन्दजी बणियाळ (वि.सं. 1750-1845) का जाम्भाणी साहित्य के इतिहास में विशेष योगदान है। इन्होंने स्वयं तो जाम्भाणी साहित्य का सृजन किया ही बल्कि इतर जाम्भाणी कवियों के सृजित साहित्य को संकलित भी किया था। इनका 'पोथा ग्रंथ ग्यान' बहुत प्रसिद्ध है। परमानन्द के हरजसों की संख्या चवालीस है जो विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में मिलते हैं। इनके हरजसों में बताया गया है कि विष्णु का नाम अत्यन्त शक्तिशाली है, इसके स्मरण से पापों का नास होता है। शरीर आत्मा दोनों निर्मल होते हैं। प्रभु का नाम लिया हुआ व्यर्थ नहीं जाता है। ऐसा विष्णु निर्गुण है, अरूप है। वह सकल सृष्टि में समाया हुआ है, फिर भी उससे पृथक है। विष्णु पृथ्वी का मूल कारण है। वह चरित करता है, लीला रचता है और सर्व व्यापक है। परमानन्दजी कहते हैं- जाम्भोजी विष्णु ही है, यह बात सत्य है। कलयुग में वह स्वयं प्रकट हुए हैं। इससे पूर्व भी वे नौ अवतार ले चुके हैं। विसन टेक वाले उनके हरजस देखिये-

ओ३म् एक विसंन की माया, इरखै सूं दोय लखाया। (1)
कहा वताऊं वार वार, विसंन नांव सब तै सार। (6)
विसंन नांव ततसार है, कहत पुकारी हो। (7)
विसंन संमान्य न नांहि और, खोजि देखो ठोर ठोर। (11)
और आन भ्रम तजो उपाय, प्रेम प्रीति कर विसंन ध्याय। (12)
विसंन सेव विसंन सेव विसंन भज्य भाई, विसंन सेवा मन्यसा फळ पाई। (14)
इस विध्य आरती विसंनजी की कीजै, तंन मंन अंतरि ध्यान धरीजै। (16)
विसंन नांम तै तरनां संतो। (17)
विसंन नांव अैसा रै, जाकै नांव लियां अघ जांहि। (18)
ओ३म् ब्रहम् विसंन एक होई, वाका पार न पावै कोई।

विसंन नांव अैसा रै, जाकै नांव लियां अघ जांहि। (18)
ओ३म् ब्रहम् विसंन एक होई, वाका पार न पावै कोई। (22)
विसंन भजन करो रे भाई, विसन भजै सोई जलम्य न आई। (23)
नर विसंन भजे से नीका रे। (24)
नर कीया विसंन सब कोई रे। (25)
नर पार विसंन कुण पावै रे। (26)
नर विसंन भज्या सुख पाया रे। (27)
नर विसंन विना कुण तेरो रे। (28)
मनां भज विसंन पियारे रे। (31)
परम जोति परसियै विसंन वास वसियै। (35)
आरती जी भाई निरंजन नाथ, ओ३म् आदि विसन री आरती। (36)

कवि परमानन्दजी ने तो यहां तक कहा है कि मनुष्य जन्म तभी सार्थक है जब वह विष्णु का जप करै अन्यथा सब कार्य व्यर्थ है, देखें-

मिनखा जलम रतन है, कोई जाणै जाणणहार।
विसंन जपै तो रतन है, नहीं तरि खाक भंगारि॥

कवि परमानन्दजी बणियाळ के एक डिंगल गीत से गुरु जाम्भोजी का विष्णु रूप प्रकट होता है। वे बताते हैं कि गुरु जाम्भोजी पूर्व में भी अपने भक्तों के उद्धारार्थ नौ अवतार धारण कर चुके थे और अब भगवें भेस में बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ आये हैं। मूल गीत देखिये-

परंम जोति प्रसियै, विसंन वास वसियै, कीजिये सुख अनंत केळा।
वारणां लिछमी लियै अपछरां आरतौ, मिळै विसंन सूं जोति मेळा॥1॥
सतजुग पहळाद संगि पांच कोड़ि प्रठिया, तेता हरिचन्द संगि सात तरिया।
दवापुर दहुठळ संगि नव कोड़ि निरखिजै, तीहूं जुगि इकवीस कोड़ि तरिया॥2॥
वीनवै पहळाद विसंन सूं विनती, क्रतार वचन नै वाड़ि कीजै।
पाप र पहर मां कूड़ कपट परवस्यौ, दवादस इकवीस सूं मेळि दीजै॥3॥
धणीय पै राखि अवतार हरि धारियौ, नारिसिंघ झंभ निकळंक होयसी।
चौहजुग रा साध जानी निकळंक रा, वसुधा दुलहैणि हरि वरिसी॥4॥
परणि निकळंक वैकुंठ पधारिस्यै, भगत भगवंत रा साथि भेळा।
पहळाद सामी परमानन्द वीनवै, मिलै तेतीस पहळाद मेळा॥5॥

जाम्भाणी कवि पदम, रामलला, विष्णुदास, पीताम्बरदास, पोहकर, गंगाराम, सुरतराम, सीतलदास आदि के भी हरजस एवं भजन मिलते हैं जो गुरु जाम्भोजी के कृष्ण रूप के हैं, जो इन जाम्भाणी हरजसों से काफी भिन्न हैं। कवि साहबरामजी राहड़ अपने एक हरजस में कहते हैं-

जम्भगुरु को ध्यान धरत है, सिव सिनकादिक अहिसा।
मिरतलोक मां चरण पुजावै, सत लोक हरि सीसा॥4॥
जो बिश्नोई गुरु मुखि होई, गहै धरम उनतीसा।
जो गुरु नै ऊचारै जम नहीं मारै, साहबराम कै ईसा॥5॥

अन्त में हम कह सकते हैं कि स्वयंभू के सहस्र नाम हैं। ऐसा गुरु जाम्भोजी ने भी अपनी वाणी में कहा है, देखे-'**सहस्र नाम सांई भळ सिंभू, म्है उपना आदि मुरारी।**' सबदवाणी में ऐसे विष्णु के नाम आये हैं वे हैं-विसंन, स्वयंभू, सारंगधर, सतगुरु, मुरारी, कृष्ण, श्याम, मोहन, गोपाल, हरि, गुरु, राम, लक्ष्मण, लक्ष्मीनारायण, ओम्, पारब्रह्म, परमेसर, नारायण, परसराम, अल्लाह, खुदा, खुदाबन्द, विसमला, रहमान, रहीम, करीम आदि। परमसत्ता के लिये विशेषण रूप में अलाह, अलेख, अडाल, अयोनी, सिंभू, निरालम्ब, अपरम्पर, अलख, अलील, निरह, निरंजण आदि शब्द भी आये हैं। समाज में गुरु जाम्भोजी और निराकार विष्णु एक माने जाते हैं। उन्होंने खुद को स्वयंभू मानते हुए परमसत्ता की अपनी अनेक विभूतियों और शक्तियों का उल्लेख किया था। उन्होंने अपने लिये निराहारी, शून्यमण्डल का राजा, कैवल्यज्ञानी, सतगुरु आदि शब्द कहे थे। उन्होंने अपनी वाणी में दसवतारों का नामोल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं-मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, नृसिंह, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि। इसी तरह ही बिश्नोई संत कवियों ने अपने हरजसों में भी विष्णु के ऐसे नामों का वर्णन किया है और गुरु जाम्भोजी को विष्णु माना है।

बिश्नोई संतों के हरजसों से यह निष्कर्ष निकलता है कि वह विष्णु (गुरु जाम्भोजी) चारों योनियों में, अनन्त रूपों में, पवन की भांति सर्वत्र निरन्तर व्यापक है। वह नदियों में जल और समुद्र में रत्न है। वह सात पाताल, तीन लोक, चौदह भवनों, बाहर-भीतर सब स्थानों पर विराजमान है। वह दूध में पानी और फूलों में पराग के समान अलग-अलग रूपों में प्रकट होता है और सबके दिलों में मौजूद है। वह सबका साक्षी है इसलिये सबको विष्णुमय ही देखना चाहिये क्योंकि भेद दृष्टि का भेदन करने वाला ही मोक्ष लाभ करता है।

इसलिये कवि परमानन्दजी बणियाळ कहते हैं-

हरजस कथा साखी कहो, कवत छंद सिरलोक।
परमानन्द हरिनांव की, सोभा तीनों लोक॥

-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, समतानगर
बीकानेर (राज.) 334004
मो.-9460002309

बिश्नोई धर्म अनुकूल दैनिक जीवनचर्या

मानव जन्म लेकर प्राणी को अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है। अनेक जन्मों तक भटकने के बाद अन्त में यह मानव जीवन प्राप्त होता है। मानव जीवन में प्राणी चाहे तो सदा-सर्वदा के लिए अपना कल्याण कर सकता है, परन्तु इसके लिए हमें अपने धर्म शास्त्रोक्त जीवनचर्या का पालन करना पड़ेगा। हमारे धर्मशास्त्र परमात्मा की आज्ञा है तथा प्राणीमात्र के कल्याण के विधान है।

हमारे संतों ने विचारपूर्वक धर्मशास्त्र के आधार पर जो दिशा निर्देश दिए हैं, वे आज भी और कल भी अनुकरणीय हैं, जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम है।

जांभाणी साहित्य में प्रात:काल से रात्रि शयन करने तक दैनिक कर्मों का वर्णन किया गया है। प्रात:काल जल्दी ही निद्रा का त्याग कर उठना चाहिए। उठने के पश्चात् सर्वशक्तिमान प्रभु का नाम स्मरण करना चाहिए। आयुर्वेदशास्त्र में बताया गया है कि ब्रह्म मुहूर्त में उठने से वर्ण, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, स्वास्थ्य, आयु की प्राप्ति होती है। शरीर कमल की तरह खिल उठता है।

वर्णं कीर्तिं मतिं लक्ष्मीं स्वास्थ्यमायुश्च विन्दति।
ब्राह्मे मुहूर्ते सञ्नागृच्छियं वा पकंजं यथा॥ (भै.सार. पृ. 93)

सेरों करो सनान कहकर दैनिक स्नान का अत्यधिक महत्व बताया गया है। पोथो ग्रन्थ ज्ञान में अवतार वर्णन खण्ड में इसका वर्णन करते हुए कहा गया है-

नख तेथ के न्हाय लो, धोक दीय सीर नायं। (पृ. 204)

तन धोने के साथ-साथ मनुष्य मन को भी साफ रखे।

गुर सह धरमै कहया संसारि, चेला की करतुति विचारि।
तया संजोगे कर सीनान, पात न्हावौ धर्म धीयान॥ (वही)

अर्थात् करतूतों को छोड़ो, नहा-धोकर धर्म का ध्यान करो हे शिष्यो।

शौच आदि कर्म और मुख मंजिन (मुंह धोना) स्वच्छ और निर्मल जल से करना शरीर के लिए लाभदायक होता है।

जब लग पाणी न्यावो होय, तब लग दांतण कर संजोय।
अंग जल त कर असनान, तदि वंसदर धोक समान॥

(पोथो ग्रन्थ ज्ञान, पृ. 203)

शास्त्रों में कहा गया है कि व्यक्ति स्नान करने के बाद ही संध्यावंदन, मंत्र जप, भगवद् दर्शन और चरणामृत ग्रहण करने का अधिकारी बनता है।

स्नानं प्रतिदिनं कुर्यान्मत्रपूतेन वारिणा।
प्रात:स्नानेन योग्य: स्यान्मत्ररतोत्रजपादिषु॥

बिश्नोई परम्परा में नीले वस्त्र धारण करना निषेध है। सनातन धर्मशास्त्रों में भी नीले वस्त्र धारण करना निषेध किया गया है। आपस्तम्ब ऋषि ने कहा है-

स्नानं दानं जपो होम: स्वाध्याय: पितृतर्पणाम्।
पञ्चयज्ञा वृक्षा तस्य नीलवस्त्रस्य धारणात्॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र)

अर्थात् जो नीले वस्त्र धारण करके स्नान् दान, जप होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, पंचमहायज्ञ आदि कर्म करता है, उसके वे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

सद्भाषण, सद्विचार, सद्भावना और न्यायनिष्ठा का परित्याग कर बाह्याडम्बर से कोई भी धर्मात्मा नहीं बन सकता। भगवत् चिन्तन में और कर्म करने में समय का सदुपयोग करना चाहिए। भगवान को सर्वव्यापक जानकर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शत्रुता और कुत्सित भावों का त्याग कर सर्वथा नियम-निष्ठा में तत्पर रहना चाहिए। शास्त्रों में दैनिक जीवनचर्या का प्रारम्भ मल त्याग, दन्तधावन और स्नान से निर्दिष्ट किया गया है। यथा-

दासी हाजर खवास कंचन ले झारी।
सौच करो दंतधावन स्नान की तैयारी॥

(मीरां बृहव्यदावली, पद 158)

शौच निवृत्ति के समय साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

विण्य लोटे पोखाल न जाय, सुचे विणां मुख बोले नांहि।
दोन्यौ नीवत्य सांझ तंत, एक विसन को जाण मंत॥

अर्थात् मनुष्य को शौचनिवृत्ति उपरान्त जल से प्रक्षालन अवश्य करना चाहिए। मुंह धोए बिना तो बोलना भी नहीं चाहिए।

शौच स्नानादि से निवृत्त होकर मनुष्य को संध्या होम करना चाहिए, विष्णु का जप करना चाहिए। होम पूजा करते समय मनुष्य अहंकार भाव से मुक्त रहना चाहिए। ऐसा मनुष्य अपने साथ-साथ औरों को भी भवसागर से पार उतार सकता है।

होम कर घी गुगल सार, पचीस नांव को पढ़ै विचार।
आपा मार दया आचरि, अवर जीव कुं लीय उबारि॥
(वही)

घर की नारियों को घर में शुद्धता और पवित्रता का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

घर की नारी उठै परभाति, पाणी छाल्य लीय जल हाथ्य।
पाक कर जदि दसुं दबार, तदि वसंदर कर तीयार॥ (वही)

घर में प्रयोग में लाने वाले जल को कपड़े से छानकर सभी कामों में प्रयुक्त करना चाहिए।

कपड़ा चोल छाणैं नीर, छाल्य सीनान कर जल तीरि।
घर मां जल वरतै सो छाल्य, वल्य जीवाणी जाय नीवाण्य॥
(वही)

घर के सब लोगों को पवित्र आचरण करना चाहिए। हरि का जाप करना चाहिए। भूल कर भी कोई पाप कर्म नहीं करना चाहिए।

जाण्य बुझय को न कर पाप, करित सबी हरि का जाप।

प्रत्येक बिश्नोई को हर काम से पहले विष्णु भगवान का स्मरण करना चाहिए, अमावस्या का व्रत रखना चाहिए।

जोई काम कर ठहराय, पहली विसन को नांव सुणाय।
हीरदै जीभ कर इलाप, मान वरत अमावस थापि। (वही)

अमावस्या व्रत के दौरान आडम्बरों से बचते हुए घी, गुगल, मिठाई और जो कोई भी अनाज सहजता से उपलब्ध हो सके होम की ज्योति के दर्शन कर धोक लगानी चाहिए। अमावस्या के व्रत में जांभोजी द्वारा उच्चरित सबद और साखी का उच्चारण करना चाहिए। प्रत्येक बिश्नोई को अपने पंथ के नियम का पालन करते हुए दसवंद अर्थात् आय का दसवां हिस्सा समाज कल्याणार्थ देने से बचना नहीं चाहिए अर्थात् दान करें।

घी गुगल होम मिष्ठान, सहजै मिलै आगै धान।
जोति देख धोक लीपटाय, गति जमाति लागै पाय।
सबद र साखी बोलै दीन, एक वरत अमावस कीन।
पूजा धरम कर पंथ मांहि, दसवंद को अंस राखै नांहि॥
परमानन्द बणियाल (सुरजन जी द्वारा रचित औतार कथा, चौपाई 225-227)

भारतीय संस्कृति और बिश्नोई पंथ परम्परा में भी अतिथि सेवा और संत सेवा पर विशेष बल दिया गया है। 'अतिथि देवो भव:' कहकर अतिथि का मान-सम्मान प्रत्येक गृहस्थ का परम कर्त्तव्य है। गृहस्थ चाहे कितना भी अर्थाभाव से पीड़ित हो, उसके घर में अतिथि सत्कार के अनुकूल तीन चीजों की कमी नहीं होती है। लोक कहावत भी है-

आ बैठ पी पाणी। तीन चीज मोल नहीं लाणी॥

परमानन्द वणियाल ने पोथो ग्रन्थ ज्ञान संग्रह में कुछ इसी प्रकार का भाव व्यक्त किया है-

अमोड़ा सांधा नै दीजै बैसणों पंखा पवन डुलाय।

संस्कृत में कहा गया है घर से निराश गया अतिथि पुण्य राशि ले जाता है, पाप छोड़ जाता है।

हिरण्यगर्भबुद्धया तं मन्येताभ्यागतं गृही।

जांभाणी साहित्य में अतिथि सेवा की बड़ी महिमा बताई गई है-

जदि तै घरि आव महमांणं, नातो कुटंब नहीं पछाण्य।
गुरु की प्रीति मीलै लीपटाय, चरण बदं करि सीस चड़ाय॥
(पोथो ग्रन्थ ज्ञान, पृ. 203)

अतिथि चाहे अपरिचित हो, उसका हृदय से आदर-सत्कार करना चाहिए, घर में जैसा भोजन उपलब्ध हो अतिथि को स्नेहपूर्वक कराना चाहिए।

दूध दही जीसौ घर सार, भोजन भाव सुं कर तीयार।
पग चरणोदिक लीय चड़ाय, अड़सठि तीरथ फल ठहराय॥
(पोथो ग्रन्थ ज्ञान, औतार कथा, चौ. 215)

इसी प्रकार कोई साधु संन्यासी भी गृहस्थ के यहां आता है तो उसको आदर-सत्कारपूर्वक भोजन करवाने से सुफल मिलता है। जिस घर से साधु सुखी अनुभव कर जाता है उस गृहस्थ को अड़सठ तीर्थों का फल प्राप्त होता है। गुरु जांभोजी महाराज कहते हैं कि साधु संतों को विश्राम, भोजन प्रदान करने और आज्ञा पालन करने वाले को सदा सुख मिलेगा, ऐसा मेरा वचन है।

थाकै साध लीयो विसराम, इह की सेवा कीजै तामं।
जीम्य को फल संबल होय, साध सुखी रह धरि सोय।
मेहरी अग्य भंग न होय, कंत कौ कहयौ न मेट सोय॥
(पोथो ग्रन्थ ज्ञान: सुरजन जी रचित औतार कथा, चौ. 216-217)

शराब, तम्बाकू, भांग, बीड़ी आदि नशीली वस्तुएं भजन तथा सदाचार में सबसे बड़ी बाधाएं हैं। नशा नाश का घर है। धर्म नियमों में कहा गया है-

अमल तमाखू भांग दूर ही त्यागे।

नानक जी ने कहा है कि यदि सच्चे नशे में डूबना है तो भगवान के नाम के नशे में डूबो।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

और खुमारी सब उतर जात है ज्यों तारा प्रभात॥

सभी प्रकार के भेदभावों को भूलकर नशों से दूर रहने का उपदेश देते हुए संत साहबराम जी कहते हैं-

वरण छतीसूं एकै प्यालै, मदरा भांग लील सब टालै।
होको भांग तामाखू त्यांगै, चाय मांस सूं दूर ही भागै॥

(जंभसार भाग-2, पृ. 76)

मनुष्य को अच्छे लोगों की संगत में रहना चाहिए।

भलियो होय सो भली बुध आवै। बुरियों बुरी कमावै॥

जिन बातों को सुनने-कहने से काम, क्रोध, लोभ, मोह उत्पन्न हो, उनसे बचना चाहिए।

चोरी निन्दा झूठा बराजियो वाद न करणो कोय।

दुर्जनों से दूर रहना चाहिए। इससे विकार पैदा ही नहीं हो पाएंगे-

कुजीवन के निकट न गएऊ, आपहि आप दुखै रहेउ।
पापी जीवै हि दूर रहावै, रवि निकट जस उलू न आवै॥ (वही)

अथर्ववेद में कहा गया है-

प्र पतेतः पापि लक्ष्मिः। (अथर्ववेद 7/115/1)

अर्थात् पाप की कमाई छोड़ दो। पसीने की कमाई से ही मनुष्य सुखी बनता है।

हक बोलै हक ही में चालै, पाप करम सब पासै टालै।
साच ही लेना साच ही देना, सांच ही जीमण सांच चवैणा॥

(जंभसार भाग-2, पृ. 76)

मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी आवश्यकताएं सीमित रखे आय से अधिक व्यय न करे। भारतीय आदर्श जीवनचर्या में परिश्रम और अनुशासन से प्राप्त ईमानदारी की कमाई पर जोर दिया गया है। रिश्वतखोरी, लूट-खसूट और अनुचित तरीकों से पैसा पैदा न करे और यह तभी संभव है जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं पर काबू पाए।

अपमित्य धान्यं याज्जघसाहमिदम्। (अथर्ववेद, 6/117/2)

अपनी सात्विक कमाई से अधिक व्यय न करें। शुद्ध जीवनचर्या सात्विक आचारों और वेशभूषा धारण करने से भगवान की प्राप्ति होती है। संत साहबरामजी कहते हैं-

विश्नू-विश्नू नाम उचारै, जाणरू जीव जंत नहीं मारै।
दया धरम करह प्रतिपाला, रूंख राय के सदा रूखाला॥

(जंभसार भाग-2, पृ. 16)

इस प्रकार धर्मशास्त्रों में बताई गई विधि से दैनिक कार्य करता हुआ जो व्यक्ति कर्त्तव्य निर्वहन में लगा रहता है, वह सुखी, क्लेशविहीन जीवन जीने में सफल होता है। वेदों और सभी सद्ग्रंथों की शिक्षाएं हैं- सदा सच बोलो, धर्ममय आचरण अपनाओ, स्वाध्याय में आलस्य मत करो।

सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्ना प्रमदः।

माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि पूजनीय लोगों की सेवा करो। श्रद्धापूर्वक सुपात्र को दान दो। सफल सुखी जीवन जीने के लिए इन कामों को सदा-सर्वदा के लिए त्याग दो। जैसे- जुआ खेलना, गोवध करना, परस्त्री गमन, मांस खाना, शराब, भांग, तम्बाकू आदि उत्तेजना रहित हो शांत भाव से रहना, किसी प्राणी की हिंसा न करना, होम आदि कर्म अपनी सामर्थ्य के अनुसार करना, दूसरों के उपकार को याद रखना चाहिए।

इसके साथ ही स्वस्थ, सुखद, सफल, यशस्वी जीवन जीने के लिए मनुष्य को माता-पिता का आज्ञाकारी, माँ के प्रति श्रद्धा भाव एक प्रेम भाव रखना, स्त्री से शान्तिपूर्ण मधुर व्यवहार वाला, भाई-बहन से द्वेष न रखने वाला एक दूसरे के प्रति आदरभाव रखने वाला होना चाहिए। अथर्ववेद में कहा गया है-

अनुव्रत, पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिव्याम्॥

अथर्ववेद, 3/30/2)

इस प्रकार दिनचर्या का पालन करने से जो नियमबद्धता, समय की पाबन्दी जीवन में आयेगी वह पूरे जीवन को प्रभावित कर जीवन को संयमित बना महानता की ओर अग्रसर करेगी। धर्मग्रन्थों में बताई गई जीवनचर्या का पालन विकसित समाज और विकसित मानव सभ्यता आधार स्तम्भ हो सकता है।

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।

अर्थात् आचारहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

- डॉ. राजाराम, सहायक प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, भूट्टू कलां
फतेहाबाद, मो. : 9896789100

संभराथल धाम : एक नजर

संभराथल धोरा विष्णु अवतार जम्भेश्वर भगवान की कर्मस्थली रही है। यहीं पर प्रभु ने अपने जीवन का अधिकांश समय व्यतीत किया। बाल्यावस्था में ही गौचारण के समय संभराथल धोरे पर आने लगे थे। यहां पर बालग्वालों को लीला दिखाते थे। एक बार जब पाताल लोक में गये तो माता-पिता तथा बालग्वाल सभी दु:खी हुए। परन्तु एक मास के बाद यहीं संभराथल पर समाधिस्थ बैठे मिले। यह स्थान उनकी विष्णुपुरी था।

माता-पिता के लोकगमन करने के पश्चात् यहीं संभराथल पर अपना आसन जमा कर बैठ गये। जीवन का बाकी भाग यहीं पर व्यतीत किया। नित्य प्रति यहां पर यज्ञ करते व ज्ञान उपदेश देते थे। दीन दु:खियों के दु:ख व अज्ञानता मिटाते थे। 24 राजा इनके शिष्य थे जो प्राय: यहां आते रहते थे। कितनी जनमानस की भीड़ यहां रहती थी, यह मात्र कल्पना की जा सकती है। गुरु महाराज 51 वर्षों तक यहां लीला करते रहे। बिश्नोई पंथ का संचालन गुरु महाराज ने इसी स्थल पर किया। इसलिए यह बिश्नोइयों की जन्मस्थली है। बिश्नोइयों के लिए इससे पावन व पवित्र स्थान और क्या हो सकता है। ऐसे पवित्र व तपोस्थल को शत-शत नमन।

संभराथल धोरे पर दो संतों के आश्रम बने हुए हैं। एक आश्रम जिसको स्वामी रामप्रकाश जी ने सबसे पहले बनवाया था, जिसके वर्तमान महन्त स्वामी रामाकृष्णा जी महाराज हैं। दूसरा आश्रम परम् तपस्वी सिद्ध सन्त स्वामी चंद्रप्रकाश जी महाराज ने विक्रम सम्वत् 2020 में बनवाया था, जिसके महन्त स्वामी छगनप्रकाश जी महाराज हैं। यहां पर संतों का निवास है व जो भक्तगण यहां अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने आते हैं, उनके ठहरने व भोजन की अति उत्तम सुविधा है।

संभराथल पर जो मन्दिर बना हुआ है इसकी नींव विक्रमी सम्वत् 2028 में स्वामी चन्द्रप्रकाश जी महाराज व स्वामी रामप्रकाश जी महाराज ने रखी थी। इसका निर्माण वि. स. 2039 में आषाढ़ वदी अमावस्या को पूर्ण हुआ था। इस मन्दिर का निर्माण श्री चन्द्रप्रकाश जी महाराज के अथक प्रयासों से पूर्ण हुआ।

उन्होंने बिश्नोईजनों से चन्दा इकट्ठा करके इसका निर्माण करवाया। आज से 44 वर्ष पूर्व इस मन्दिर का निर्माण आरम्भ हुआ था। उस समय की स्थिति कैसी थी। हम इसकी कल्पना ही कर सकते हैं। संभराथल पर पहुंचने के लिए कच्चा मार्ग, धोरों का रेतीला मार्ग, सामान वहां कैसे पहुंचा। पानी व बिजली थी नहीं। लोगों ने ऊँटगाड़ियों से व स्वयं अपने सिर पर रखकर निर्माण सामग्री यहां तक पहुंचाई। बड़ी विषम परिस्थिति थी परन्तु संतों व भक्तों के सामर्थ्य से निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

वर्तमान मन्दिर से पहले संभराथल पर उत्तर की पौड़ियों की तरफ एक छोटा सा मन्दिर बना हुआ था। इसको स्वामी रामानन्द जी महाराज ने वि.सं. 1990 के आसपास बनवाया था। वो यहीं पर रहते थे। बिश्नोई जनों के घरों से अन्न व घी मांग कर लाते थे। जिससे यहां पर यज्ञ होता था और अपनी उदर पूर्ति करते थे। उस समय यहां पर कोई सुविधा नहीं थी। ना कोई आश्रम था, ना पीने का पानी था तथा ना बिजली थी। यहां पर पानी व बिजली की व्यवस्था लगभग वि.सं. 2038 में हुई थी। स्वामी रामानन्दजी महाराज के समय इस छोटे से मन्दिर में पूजा व सेवा का काम थापन लोग किया करते थे। यहां छोटा सा मन्दिर लगभग 50 वर्षों तक रहा।

वि.सं. 1593 में गुरु महाराज ने अपनी लीला समाप्त करके अपने लोक को पधारे तबसे लेकर वि.सं. 1990 के बीच का समय अज्ञात मालूम पड़ता है। लगभग 400 वर्षों तक इस पवित्र स्थल का इतिहास नामालूम पड़ता है। इतना तो सुनने में आता है कि भक्तजन अमावस्या को यहां पर आते थे। लकड़ी इकट्ठी करके उन पर घी डालकर ज्योत प्रकट करके जाते थे तथा दोनों मेलों पर लोग यहां दर्शनार्थ आते थे परन्तु सुविधा के अभाव के कारण, यहां पर ठहरता कोई नहीं था। वापिस मुकाम चले जाते थे।

महासभा ने स्वामी चन्द्रप्रकाश जी महाराज से निवेदन किया कि मन्दिर पर दोनों मेलों पर आने वाले चढ़ावे पर सिर्फ महासभा का अधिकार होना चाहिए। चन्द्रप्रकाश जी महाराज त्यागमूर्ति व तपस्वी सन्त थे, उन्होंने सहर्ष यह स्वीकार कर लिया। तब से लेकर आज पर्यन्त दोनों मेलों से आने वाला चढ़ावा महासभा ले जाती है।

हम अच्छी तरह जानते हैं कि पहले श्रद्धालु सिर्फ मेलों के ही अवसर पर आते थे, अमावस्या को तो नजदीक के बिश्नोईजन आकर चले जाते थे। अभी पिछले कुछ वर्षों से ही भक्तजन अमावस्या पर काफी संख्या में आने लगे हैं।

कुछ विशेष जानकारियां:-

1. मन्दिर का निर्माण संतों ने करवाया।

2. मन्दिर के चौक पर जो संगमरमर लगा हुआ है इसका काम भी कैलाश जी सिगड़, निबड़ीयासर निवासी जो बिजली विभाग में अधिकारी थे उन्होंने अपने निज खर्चे से पूर्ण करवाया।

3. मन्दिर में जाने के लिए जो मुख्य पौड़ियां बनी हुई हैं यह श्री जगदीश जी धारणियां ने अपने निज खर्चे से बनवाई।

मन्दिर की जो वर्तमान स्थिति है उस पर जरा विचार करें।

1) मन्दिर के अन्दर दिवारों पर छत तक संगमरमर लगा है, इसलिए पेंट की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती, केवल बाहर से ही इसकी साफ-सफाई, रंग-रोगन व चमक-दमक रखना महासभा की जिम्मेदारी है।

2) चौक पर लोहे की ग्रिल लगी है और छोटी सी यज्ञशाला बनी हुई है, यह कार्य महासभा का करवाया हुआ है।

वर्तमान स्थिति:

1. मन्दिर में पिछले 10 वर्षों से कोई पेंट व रंग-रोगन का कार्य नहीं करवाया गया।

2. मन्दिर के चौक की ग्रिल का पेंट उतर चुका है और जंग लगने से लाल-लाल दिखती है।

3. लोहे की ग्रिल के बीच में पूरे चौक पर 34 पिलर बनाए गए हैं जिन पर संगमरमर लगना था जो आज तक नहीं लगा है। सिर्फ सीमेंट का कच्चा प्लास्टर हुआ है जो जगह-जगह से टूटा हुआ दिखता है।

4. इन पिलर पर बिजली की रोशनी के लिए निर्माण के समय से ही लोहे की पाइप लगाई गई थी ताकि मंदिर दूर से रोशन नजर आए। परन्तु इन पिलर पर लाइट नहीं लगी है।

5. मन्दिर का मुख्य प्रवेश द्वार जिस पर सीमेंट से निर्मित 'श्री जम्भेश्वर भगवान' का पेंट बिल्कुल उतर गया है और यह बड़े गौर से देखने से ही नजर आता है।

6. इसके नीचे मुख्य द्वार पर पेंट से लिखा 'भगवान श्री जम्भेश्वर तपोस्थल समराथल धाम' बहुत ही कम पढ़ने में आता है।

7. मन्दिर का छज्जा जो चारों तरफ छत पर बाहर निकला हुआ है उसकी हालत बहुत खस्ता है। वह सारा फटा पड़ा है। इसमें लगा सरिया बाहर नजर आता है। इस वर्ष जुलाई माह में वर्षा में उत्तर की तरफ खुलने वाले दरवाजे के उपर छज्जे का प्लास्टर धड़ाम से गिरा। यह हमारे धर्म के उद्‌गम स्थल के मन्दिर की हालत है। अन्य धर्मों के लोग अक्सर यहां आते रहते हैं, वे क्या प्रभाव हमारे प्रति लेकर जाते हैं, जरा कल्पना कीजिए।

8. मन्दिर की मुख्य पौड़ियों के पूर्व की तरफ पौड़ियां बनी है जो कच्चे भाग में खुलती है जहां अमावस्या व मेलों के समय यज्ञ होता है। इन पौड़ियों पर कोटा स्टोन लगा हुआ है। गर्मी के मौसम में कोटा स्टोन इतना गर्म हो जाता है कि भक्तजनों के पैर जलने लगते हैं और संतजन इन पर पानी डालकर ठंडा करने का प्रयत्न करते हैं।

अब नई महासभा का पुनर्गठन हुआ है, मैं उनसे करबद्ध निवेदन करता हूं कि वो अपने पद ग्रहण के दिन ही इस मन्दिर की स्थिति का अवलोकन करें और सर्वप्रथम इसकी भव्यता व सुन्दरता पर ध्यान देवें और इसकी मरम्मत करवाकर भगवान जम्भेश्वर को अपने श्रद्धासुमन भेंट करें।

संभराथल पर दोनों आश्रमों के महंत अपने अथक प्रयासों से, यहां पहुंचने वाले भक्तजनों के भोजन व ठहरने की सुविधा की व्यवस्था करते हैं। इसकी पूर्ति के लिए संतजन ग्रामों से भक्तजनों से सहयोग में अन्न इकट्ठा करके ले आते हैं। भक्तजनों को दूध-दही आदि सुविधा के लिए आश्रम में गायें रखी हुई हैं, इनके चारे की व्यवस्था संतजन स्वयं करते हैं। ये संतजन नि:स्वार्थ भाव से यहां पहुंचने वाले भक्तजनों को सुविधा उपलब्ध करवाते हैं। समाज इन संतों का ऋणी है। जितनी शुद्धता, पवित्रता व सुव्यवस्था संभराथल धोरे के आश्रमों में है ऐसी किसी अन्य धाम पर नहीं है। मैं इन संतों को कोट-कोटी नमन करता हूं।

-जगदीश चन्द्र वणियाल
580, सैक्टर 19, सिरसा (हरि.)
मो.: 9466332300

समेलिया जम्भेश्वर मन्दिरः एक ऐतिहासिक धरोहर

राजस्थान के जिला भीलवाडा तहसील माण्डल के अन्तर्गत ग्राम समेलिया में बिश्नोई पंथ के प्रर्वतक भगवान श्री जम्भेश्वर का चार सौ साल पुराना ऐतिहासिक भव्य मन्दिर है, जिसका विवरण इस प्रकार है। भगवान जाम्भोजी के भ्रमण कार्य में इस समेलिया ग्राम से एक किलोमीटर दूरी पर भगवान जम्भेश्वर ने इस ग्राम में एक वर्ष तक जंगल में निवास कर, ग्राम पुर, दरीबा एवं समेलिया के निवासियों को बिश्नोई बनाया था। राणा सांगा जाम्भोजी के उपदेश से प्रभावित हुआ और बहुत धन जाम्भोजी को भेंट किया। उस धन से भगवान जम्भेश्वर जी ने 103 बीघा भूमि पर एक विशाल तालाब खुदवाया। झालीरानी ने इस तालाब पर पौड़ियां बनवाईं। इस तालाब का नाम जम्भ सरोवर रखा गया।

इस मन्दिर की नींव की गहराई उन्नीस गज है एवं ऊँचाई इक्कीस गज है। मन्दिर का घेरा 50 फुट लम्बा व चौड़ा है। चारों ओर दीवार की चौड़ाई तीन फुट है। मन्दिर परिसर सवा तीन बीघा भूमि पर है। जिसमें भगवान जम्भेश्वर का मन्दिर तथा नौबतखाना, स्थवान घुड़साल और सूरजपोल दरवाजा बना है। मन्दिर परिसर के चारों ओर 6 फुट ऊँचा पत्थर का परकोटा है, जो वर्ततान में टूटफूट गया है। मन्दिर का उछाला साढ़े दस फुट है, मन्दिर का रंग एवं चित्रकारी चार सौ वर्ष के बाद भी जैसी की तैसी है। इस मन्दिर के पीछे एक सौ छियासी बीघा भूमि है, किंतु मेजा बांध की डूब में आने से यह भूमि रेवेन्यू में पेटा दर्ज कर दी गई है, जब वर्षा होती है तब इसमें पानी भर जाता है परन्तु मन्दिर में पानी नहीं भरता है तथा मन्दिर में जाने हेतु जम्भ सरोवर को पाल से मार्ग सुरक्षित रहता है। मन्दिर या मन्दिर भूमि का मुआवजा भी डूब में आने पर न तो शासन ने दिया है और न समाज ने दिया है और न मन्दिर जो कि बिश्नोई समाज की आस्था का प्रतीक है उस स्थान की महत्त्वता मुआवजा लेकर मिटाना भी समाज के लिए उचित है।

मन्दिर जीर्णोद्धार के लिए एवं उसकी सुरक्षा के लिए मन्दिर परिसर में आरसीसी की 12 फुट ऊँची चारदीवारी

जिला भीलवाडा के समेलिया गांव स्थित बिश्नोई समाज का ऐतिहासिक भगवान श्री जम्भेश्वर मन्दिर जिस पर उत्कीर्ण फड़ चित्रकारी एवं पर्यावरणीय रक्षा के संदेश।

बनाकर, भरती कर उसमें बगीची लगाकर आकर्षित बनाया जा सकता है। जिसमें करीब दस लाख रुपये का खर्च आएगा। यदि यह स्वरूप साकार हुआ तो यह मन्दिर स्वर्ण मन्दिर का दूसरा रूप दिखाई देगा एवं दोनों ओर से पानी के मध्य होने से पर्यटकों को भी आकर्षित करेगा। बांध के डूब में आने के बाद करीब 50 वर्ष से मन्दिर की पूजा-अर्चना व्यवस्था भी भंग हो चुकी थी। ब्रह्मलीन स्वामी श्री चन्द्रप्रकाश जी के शिष्य श्री स्वामी भगवान प्रकाश जी के देवास जिले के ग्राम नेमावर आश्रम से अपने साथ पांच व्यक्तियों को म.प्र. से लेकर समेलिया ग्राम में आए और भंडारा देकर पुर दरीबा एवं समेलिया के लोगों को उत्साहित किया तथा इस मन्दिर की सुरक्षा हेतु कमेटी का निर्माण किया जो पंजीकृत है। मन्दिर की पूजा व्यवस्था भी कर दी है। इस मन्दिर का प्राचीन इतिहास जम्भसार प्रकरण प्रथम भाग में महाराणा सांगा और झालीरानी के काल से विक्रम सम्वत् 1563 ई. में गुरु महाराज ने निर्माण कराया था। जिसका विस्तरित प्रमाण जम्भसार में चित्तौड़ की कथा से विदित हुआ है। अतः अखिल भारतीय बिश्नोई समाज से अपील है कि अपने तन-मन-धन से सहयोग देकर भगवान जम्भेश्वर मन्दिर समेलिया की प्रतिकता को कायम रखें।

-कृष्ण देव पवार
हिसार (हरियाणा)
मो. 9215320423

अमावस्या के व्रत का महत्त्व

काशी में एक सोमदत्त नाम का ब्राह्मण अपने परिवार के साथ रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी, एक बेटा व बेटी थे। एक दिन उनके घर पर साधु आया। साधु ने दरवाजे पर आकर कहा भिक्षान् देही, भिक्षान देही। सोमदत्त की पत्नी व उसकी बेटी ने एक पात्र भिक्षा ली और बहार की तरफ चली।

कहते हैं कि कोई साधु भिखारी व महात्मा के द्वार पर जितनी ज्यादा देकर तक रूकेगा वो उतना ही अपना अपुण्य छोड़ता रहेगा। इसलिए जल्दी से भिक्षा देकर उसको विदा करना चाहिए। इसी प्रकार सोमदत्त की पत्नी व पुत्री ने दोनों ने साधु को प्रणाम किया तो साधु ने बहुत सारे आशीर्वाद दिए तथा आयुष्मान भव, शोभाग्यवती भव, दीर्घ आयुमती इत्यादि। जब उसकी बेटी ने प्रणाम किया तो साधु उसके चेहरे को देखता रह गया। साधु कुछ नहीं बोला, सिर्फ इतना कहा कि दीर्घआयु मती भव। तब उसकी माँ को चिंता हो गई। उसने अपने पति व पुत्र को बुलाया और कहा कि देखा मैंने साधु बाबा को प्रणाम किया तो उन्होंने खूब आशीर्वाद दिए,परन्तु जब बेटी ने प्रणाम किया तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। सोमदत्त जी बड़े भोले स्वभाव के ज्ञानी ब्राह्मण था। सोमदत्त ने साधु से पूछा कि ऐसा क्यों? तब साधु बाबा ने कहा कि मैं मेरी वाणी को मिथ्या नहीं करना चाहता। मुझे जाने की आज्ञा दो। सोमदत्त ने कहा कि बाबा ऐसी क्या बात है? साधु ने कहा कि मैं देख रहा हूँ कि आपकी बेटी की शादी अक्षय तृतीया को तय हुई है। बड़ी धूम-धाम से शादी का उत्सव होगा मगर जब फेरों का समय होगा तो तीसरा फेरा होने के बाद जैसे ही चौथा फेरा लेगी तो उसके पति की मृत्यु हो जाएगी। यह सुनकर बेटी फफक-फफक कर रोने लगी। माँ ने कहा कि बेटी अगर यह महात्मा तेरा भविष्य बता सकता है तो वह उसका उपाय भी बता सकता है। सोमदत्त ने कहा महाराज जी इसका कोई उपाय भी तो होगा। साधु ने कहा कि यहा से कुछ दूर कजली वन में एक गुजरी माँ रहती है। वह अमावस्य का व्रत रखती। अमावस्या के व्रत में इतनी शक्ति होती है कि वह तुम्हारी बेटी के पति की जान बचा सकती है। साधु वहां से चला गया।

उसके बेटे ने कहा कि मैं जाऊँगा कजली और अपनी बहन के विवाह से पहले गुजरी माँ को लेकर आऊँगा। धीरे-धीरे कजली वन की तरफ चल पड़ा। कुछ दिनों के बाद वह कजली वन पहुंच जाता है। कजली वन में बहुत बड़ा, बहुत सारे साधु, असंख्य विद्यार्थी कोई यज्ञ कर रहे थे तो कोई अध्ययन कर रहे थे। उस ब्राह्मण बालक को लगा कि गुजरी महान् बहुत है। कई देर तब गुजरी माँ नहीं मिलती तो बालक ने देखा रात्री में कुछ झूठे बर्तन पड़े हैं वह साफ करने लगा। गुजरी माँ ध्यान कर रही थीं। तब उसको बर्तन की आवाज आई तो गुजरी माँ वहां से उठकर गईं तो देखा माथे पर चंदन का तिलक, गले में जनेऊ, गुजरी माँ ने कहा ब्राह्मण बालक आप कौन हैं। बालक ने कहा आप गुजरी माँ हैं। गुजरी ने कहा हाँ मुझे ही गुजरी कहते हैं। बालक ने कहा कि माँ हमारे घर में एक साधु आया था। उन्होंने मेरी बहन की भविष्यवाणी और आपका पता भी बताया। आप ही उसका सुहाग बचा सकती हैं, तो माँ आप काशी चलेंगी ना, निराश तो नहीं करेंगी?

गुजरी माँ ने अपने आश्रम का सारा भार वहां के लोगों पर छोड़ दिया और कहा की मुझे आने में विलम्ब हो सकता है। तब वह वहां से चल पड़े। आखातीज से एक दिन पूर्व गुजरी माँ ब्राह्मण के घर पहुंची। ब्राह्मण ने गुजरी माँ का आसन लगाया, खूब अभिवादन किया। दूसरे दिन बारात आई, सभी लोग विवाह उत्सव को बड़ी धूप-धाम से मना रहे थे। सभी बरातियों का स्वागत, भोजन कराया। फेरों का समय हुआ तो लड़की ने फेरा लेना शुरू किया, तीन फेरे होने के बाद जैसे ही चौथा फेरा शुरू किया। इतने में दूल्हे का सिर चकराया और यज्ञ वेदी पर गिर गया व उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

ब्राह्मण बालक ने गुजरी माँ से कहा कि माँ उस साधु की एक बात तो सत्य हो गई तो दूसरी बात भी आप सत्य करो। गुजरी माँ ने वहां जो कलश रखते हैं। सभी देवता को साक्षी मानते हुए उसकी कलश का जल लिया, सूर्य देव को प्रणाम किया और कहा कि हे भगवान श्री हरि, हे भगवान विष्णु यदि मैंने निस्वार्थ भाव से अमावस्या का व्रत रखा है तो उस व्रत में मुझे जो पुण्य मिला है, मैं अमावस्या का पुण्य उस नन्हें बालक को सौंपती हूँ। हे विधाता उसको जीवन दान दो। गुजरी माँ ने जैसे ही जल का छिंटा लगाया तो बालक उठ कर खड़ा हो गया। उसके बाद गुजरी माँ वहां से वापिस कजलीवन की ओर चली गईं। रास्ते में अमावस्या का व्रत रखा। अमावस्या के व्रत में इतनी शक्ति होती है कि एक मुर्दे में भी जान डाल दे। तो बिश्नोई भाई-बंधुओं अमावस्या का व्रत अवश्य रखना। विज्ञान भी कहता है कि मनुष्य को भोजन चंद्रमा की सोलह कलाओं से पचता है, रस बनता है। लेकिन अमावस्या के दिन चंद्रमा ही नहीं होगा तो कलाए कहां से आएंगी। अत: अमावस्या को भोजन नहीं करना चाहिए यह भोजन व्यर्थ जाता है।

-गोपाल बेनीवाल, जांगलू
बीकानेर, मो. 9414973029

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ बधाई सन्देश ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

श्रुति बिश्नोई सुपुत्री श्री उमेश पटेल बेनीवाल, निवासी इन्दौर, मध्यप्रदेश को यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका द्वारा 18 लाख की AFS KL & YES स्कॉलरशिप विजेता घोषित किया गया। स्कॉलरशिप के तहत 11जी क्लास की पढ़ाई हेतु अमेरिका में इंडिआना प्रान्त के फोर्ट वेन शहर में कैरोल हाई स्कूल में एक वर्षीय पाठ्यक्रम 12 अगस्त 2015 से शुरु होकर जून 2016 के अंतिम सप्ताह में स्वदेश वापस लोटेंगी। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

सुनील कड़वासरा सुपुत्र स्व. श्री रामदयाल कड़वासरा, निवासी मंगाला, जिला सिरसा हाल निवासी बीकानेर की पदोन्नति आर.पी.एस. से आइ.पी.एस. रैंक पर हुई है। आपकी इस पदोन्नति पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

कमलेश सुपुत्र श्री लादूराम खिलेरी, निवासी हाणियां, त. बावड़ी, जिला जोधपुर (राजस्थान) ने RAS में 333वीं रैंक प्राप्त की है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

श्रीमती संगीता बिश्नोई सुपुत्री श्री रामसिंह भादू, से.नि. कमाण्डैंट निवासी गांव काजलहेड़ी, जिला फतेहाबाद (धर्मपत्नी श्री ओमप्रकाश धारणियां, एक्स.ई.एन., सदलपुर निवासी) की पदोन्नति खण्ड शिक्षा अधिकारी के पद से उप जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

सुरेश कुमार सुपुत्र श्री गोपीराम बैनीवाल निवासी असरावां, हिसार ने गुवाहटी में आयोजित 40वीं ऑल इण्डिया बिजली बोर्ड की टूर्नामेंट में 400, 800 मी., 4x100 व 4x400 मी. रिले दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किए तथा आपको ऑल इंडिया बिजली बोर्ड का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

पदम बिश्नोई सुपुत्र श्री रामस्वरूप बिश्नोई निवासी साकेत कालोनी, आजाद नगर, हिसार ने बीकानेर विश्वविद्यालय द्वारा घोषित एल.एल.बी. के परिणाम में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

आशीष बिश्नोई सुपुत्र श्री बनवारी लाल ज्याणी, निवासी सी-99, समता नगर, बीकानेर का चयन रिलायंस इण्डस्ट्रीज लि. में ड्रिलिंग इंजीनियर के पद पर हुआ है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

❖

आस्था सुपुत्री श्री सुरेन्द्र गिला, निवासी गांव सरदारपुरा, त. अबोहर (पंजाब) ने 10वीं कक्षा में 90% अंक प्राप्त किए हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

दिव्या थापन सुपुत्री श्री सुभाष थापन, निवासी गांव दुतारावाली, त. अबोहर (पंजाब) ने 90% अंक प्राप्त किए हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई।

आओ शहीदी दिवस पर प्रण करें...

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने एक सुन्दर प्रकृति की परिकल्पना की और मानव को जीवन-यापन करने का रास्ता बताया। 560 वर्ष पूर्व में भविष्य की रूपरेखा तैयार की और पर्यावरण के प्रति हमें सजग किया। उसी सजगता का एक सुन्दर उदाहरण उनके 363 शिष्यों ने पेश किया। 1730 में राजाओं का शासन था और वो लोग साम्राज्य स्थापित करने के लिए युद्ध करते थे, राजाओं के लिए अपने भी पराये होते थे। युद्ध में राजाओं की मौत के बाद उनकी पत्नियाँ जौहर करती थी लेकिन उसी काल में प्रकृति के प्रहरी के रूप में गुरु जम्भेश्वर भगवान के शिष्य इन राजाओं से प्रकृति के लिए युद्ध किया और खेजड़ी वृक्ष को बचाने का अद्वितीय उदाहरण पेश किया। 363 नर-नारियों का ये बलिदान साको 363 के रूप में विश्व पटल पर अपना नाम अमर कर गया। यह युद्ध सम्राज्य, शासन व सत्ता के लिए नहीं था यह युद्ध तो धरती माता का चीर हरण बचाने के लिए था।

आज उन 363 लोगों की याद में शहीदी दिवस है केवल श्रद्धांजलि अर्पित करना ही हमारा फर्ज नहीं बनता। हम उन लोगों के बलिदान को सार्थक तब ही कर सकते है जिस कार्य के लिए उन लोगों ने अपने प्राण त्यागे उन कार्यों को आगे बढायें। धरती माता को पेड़ रूपी आभूषण से सुशोभित कर हरा भरा बनायें। क्या सिर्फ किताबों के पन्नों और कवि की कविताओं से ही हम मान लेगें की हमारा उद्देश्य पूरा हो गया। जब कोई व्यक्ति किसी को अपने प्राणों से प्रिय मानकर प्राण दे देता है और हम उनके पिछे उसके उद्देश्य व कार्य को बनाये नहीं रख पाते तो शायद उन लोगों का दिल भी पसीजता होगा कि हमारी बलि सार्थक सिद्ध नहीं हुई।

प्रदूषण की हवा और प्रकृति का सूखापन ये दर्शाता है कि कहीं न कहीं हमने बलिदानियों के सपने को साकार करने में कमी दर्शायी है। आज खेजड़ली के शहीदों की प्रेरणा लेकर ही वन्य जीवों के लिए विशेष कर हिरणों के लिए अनेक लोगों ने शहादत दी है लेकिन हमारी कमजोरियों के कारण आज हिरण लुप्त होने की कगार पर हैं। यदि हिरण, खेजड़ी व प्रकृति इस प्रकार लुप्त होती जायेगी तो उन शहीदों की आत्मा हमें कैसे माफ करेगी।

आज हमें जमीनी हकीकत पर काम करना होगा दिखावा कम करना पड़ेगा। वन्य जीवों व प्रकृति की हरियाली के लिए ठोस कदम उठाना होगा नहीं तो हमारा प्रकृति प्रेम फोटोग्राफी तक सीमित हो जायेगा। आज हमारी फसलों कि रक्षा के लिए लगाई जाली हिरणों के लिए मौत का साधन बन रही है जिसे हमें हटाना होगा। शिकारियों की गोली हमें सजग रहकर रोकनी पड़ेगी, जगलों की अन्धाधुन्ध कटाई व पेड़ काटने वाले लोगों से डटकर सामना करना होगा। हर वर्ष प्रत्येक व्यक्ति को 5 पेड़ बड़े करने का प्रण लेना होगा तभी हम उन लोगों की शहादत को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर पाएंगे। आओ आज खेजड़ली शहीद दिवस पर प्रकृति व वन्य जीवों को बचाने का प्रण लें और साको 363 को सार्थक करें।

- रोशनलाल खिचड़
एकलखोरी, जोधपुर
मो. 9461578478

माँ-बाप का प्यार

माँ की ममता, प्यार पिता का पाया !
पूत के लिए जिन्होंने हर आँसू बहाया।।
माँ ने लोरियाँ रह-रहकर सुनाई !
पिता ने खरीद कर दी शहनाई।।
तेरी ही चिंता जिन्होंने हर पल की है !
खुद मर-मिटकर तुझे ये जिन्दगी दी है।।
माँ का दूध पीकर तू बड़ा हुआ है !
पिता की उंगली पकड़कर खड़ा हुआ है।।
जो तेरे कर्ता, धर्ता, सच्चे पालनहार हैं !
उनसे ही महका ये तेरा भवसंसार है।।
पत्थरों के सामने सर अपना झुकाता है !
माँ-बाप को तू निर्दयी बनकर ठुकराता है।।
पुत्र तेरी ये प्रार्थनाएँ काम नहीं आयेगी !
अगर माँ-बाप को तेरी आत्मा सताएगी।।
बलवंत रहता है तू चारो धामों की शरणों में !
पर सबसे बड़ा तीर्थ है, माँ-बाप के चरणों में।

बजरंग लाल डेलू
गांव काकड़ा, बीकानेर (राज.)

जाँबाज सैनिक जगदीश बिश्नोई की शहादत पर कोटि-कोटि नमन्

कश्मीर सीमा पर तैनात गाँव पाँचला सिद्धा, तह. खींवसर, जिला नागौर निवासी जाँबाज सैनिक जगदीश गोदारा बिश्नोई ने देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए 11 सितम्बर, 2015 को अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इसके लिए सम्पूर्ण शिरोमणी बिश्नोई पंथ गहरा दु:ख मिश्रित गर्व का अनुभव करता है।

राजस्थान की बलिदानी धरती नागौर जिले में एक बार फिर शहादत के अध्याय में गाँव पाँचला सिद्धा, तह. खींवसर निवासी जाँबाज जगदीश बिश्नोई का नाम जुड़ कर अमर हो गया है। पाँचला सिद्धा गाँव निवासी श्री जगदीश बिश्नोई देश की रक्षा का जज्बा लिए सन् 2000 में सेना में भर्ती हुए थे। गत 16 अगस्त को छुट्टियाँ पूरी कर नागौर (राजस्थान) का वह लाल जब भारत माता की सीमाओं की रक्षा करने के लिए घर से रवाना हुआ तो उसने अपने परिवार के सब लोगों को बड़े खुले दिल से कहा था, 'यदि मैं देश की सेवा में लड़ता हुआ शहीद हो जाऊँ तो कभी कोई आँसू मत बहाना बल्कि गर्व महसूस करना।'

जगदीश बिश्नोई का 11 सितम्बर, 2015 को लगभग एक बजे फोन आया था और फोन पर शहीद जगदीश बिश्नोई ने अन्तिम बार अपने परिजनों से बात की थी। उस समय भी बातचीत में आत्मविश्वास से सराबोर था। ओमप्रकाश के अनुसार उनके भाई जगदीश ने फोन पर कहा था कि सेना का आदेश आया है दुश्मनों से लड़ने के लिए जा रहा हूँ। मौका मिला तो दो चार दुश्मनों को तो मार ही दूँगा। उन्होंने यह भी कहा था कि आज रात शायद बात न हो पाये मगर 12 सितम्बर को पुन: बात करने का वादा किया था।

थांबड़िया गाँव के पास एक गाँव है सैनिक नगर। यह पूरा का पूरा गाँव सैनिकों का है। थांबड़िया बिश्नोइयों की ढ़ाणियाँ-पाँचला सिद्धा, सैनिक नगर सहित आसपास के गाँवों में जगदीश बिश्नोई के शहीद होने का समाचार मिलने पर जहां सभी के सभी गांवों में शोक की लहर दौड़ गई है, वहीं ग्रामीण लोग देश की सेवा करते करते जगदीश बिश्नोई द्वारा वीरगति को प्राप्त होने पर सभी गर्व का अनुभव भी कर रहे हैं। जगदीश बिश्नोई जब भी गाँव में आते थे तो भी सदैव देश की रक्षा की चिन्ता करते रहते थे। पिछले दिनों 16 अगस्त को छुट्टी पूरी करके गया तब भी उसने घर वालों को कहा था कि पाँच साल का बेटा और छ: माह की बेटी है। वह चाहते थे कि बेटे को बड़ा होने पर देश की रक्षा के लिए सेना में भेजना है।

जम्मू कश्मीर के हंदवाड़ा में शहीद हुए जगदीश बिश्नोई को अंतिम सलामी देता उनका चार वर्षीय पुत्र अर्पित गोदारा।

शहीद जगदीश गोदारा के परिवार में उनकी धर्मपत्नी, दो बच्चे और माता-पिता हैं तथा एक बड़ा भाई है। माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा जाँबाज शहीद जगदीश गोदारा बिश्नोई अपने भारत देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए शहीद हो गया। वह दो महीने पहले गाँव में छुट्टी आते ही परिवार वालों से बातें की। जाँबाज जगदीश ने कहा था कि देश का सेवा करते-करते यदि कोई शहीद हो जाए तो जिन्दगी सफल होती है यानि जिन्दगी सही मायने में काम आती है। देश के लिए मर मिटने का जज्बा रखने वाले सब परिवारों में दोस्तों सहित सभी को सरहद तैनाती के बहादुरी के किस्से सुनाते थे। दुश्मन से भिड़ने और उन्हें मार गिराने के हौसले के साथ हर समय तैयार रहते थे। शहीद का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल, पंचकूला

मानव मन की शांति का केन्द्र – श्री विष्णुधाम

प्रकृति हित त्याग और बलिदान के लिए विश्वविख्यात बिश्नोई समाज सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। राजस्थान के बीकानेर स्थित मुक्तिधाम मुकाम, जहाँ बिश्नोई समाज का 'महाकुम्भ' है वहीं जोधपुर जिले में स्थित जांभोलाव धाम समाज का 'हरिद्वार' है। लोदीपुर धाम, रोटू और लालासर धाम भी अपनी विशिष्टता के लिए जाने जाते हैं।

बिश्नोई समाज के प्रमुख स्थलों में एक अति महत्त्वपूर्ण नाम विगत कुछ महीनों में सामने आया है, वो है- श्री विष्णुधाम तालछापर, समाज का सौभाग्य है कि कुछ विलम्ब से ही सही, पर भगवान नारायण का अपनी तरह का पहला धाम बनने जा रहा है। श्री विष्णुधाम जो कि राजस्थान मरूस्थलीय जिला चुरू की सुजानगढ़ तहसील में स्थित कृष्णमृग अभ्यारण्य तालछापर के करीब बनने जा रहा है। श्री विष्णुधाम की परिकल्पना समाज के युवा संत स्वामी रघुवर दयाल जी आचार्य की है और इस नारायण धाम की आधारशिला 6 दिसम्बर 2014 संत शिरोमणि स्वामी भागीरथदास जी आचार्य द्वारा रखी गई।

श्री विष्णुधाम के इतिहास पर नज़र डालें तो यह वो जगह है जहां साक्षात् नारायण ने साधुवेश में लोहट जी को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया था। बात विक्रम संवत् 1507 की है। नागौर परगने के पीपासर गांव में भयंकर अकाल पड़ा और उस समय वहां के ग्रामपति ठाकुर थे लोहट जी पंवार। अकाल से त्रस्त ग्रामवासी ग्रामपति लोहट जी के पास जाकर कहने लगे कि "हे महाराज, अकाल में अब यहां समय व्यतीत करना मुश्किल हो रहा है और पशुधन के लिए तो एक-एक क्षण अत्यंत भारी बीत रहा है।" यह बात लोहट जी की धर्मपत्नी हंसा देवी को पता चली तो हंसा देवी ने कहा कि "मेरे पीहर (अर्थात् द्रोणापुर चुरू) में अच्छी वर्षा हुई है, इसलिए वहां पशुओं के लिए भी पानी-चारे का अच्छा प्रबंध हो जाएगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि हम सब वहीं चलकर अकाल का काल व्यतीत करें।"

समस्त गाय-ग्वाले हंसा जी के अनुरोध पर लोहट जी के ससुराल द्रोणापुर चुरू की ओर चले। सुकाल के कारण सबके दिन अच्छे से कटने लगे। विशेषकर पशुओं के लिए तो स्वर्ग थी यह जगह।

एक दिन द्रोणपुर में भयंकर बारिश हुई। पशुधन अलग-अलग बिछड़ गए। लोहट जी स्वयं रात के समय पुशओं को ढूंढने निकल पड़े। उधर अच्छी बारिश को देख जोधा नामक जाट अपने पुत्रों सहित खेत जोतने के लिए निकलता है। जैसे ही सूर्योदय से पूर्व जोधा अपने बैलों को तैयार कर शगुन देखता है और सामने लोहट जी आते दिख जाते हैं। जोधा जाट संतान विहीन लोहट जी को अपशकुन मान अपने पुत्रों को बैल सहित पुनः घर की ओर चलने का कहता है।

लोहट जी को देखकर करसा मन घबराय
खेतां धान न नीवजे बीज अकारथ जाय।

लोहटजी जोधा जाट से कहते हैं कि बारिश अच्छी है फिर आप वापिस क्यों जा रहे हैं। जोधा कहता है -"एक तो आप पुत्रहीन हैं, गांव के जंवाई और ठाकुर पैरों से नंगे अलग। ऐसे व्यक्ति के सुबह-सुबह दर्शन अपशगुन होते हैं।"

जोध जाट की यह बात सुन लोहट जी के मन में बड़ा भारी दुःख होता है। लोहट जी अपना जीवन निरर्थक मानते हैं। लोहट जी भगवान को यादकर रोते-रोते बिलखते हैं। लगातार छः महीने की कड़ी तपस्या से प्रसन्न होकर साक्षात् नारायण साधु वेश में लोहट जी को दर्शन देकर नौंवे महीने जंभेश्वर भगवान के रूप में हंसा की कोख से अवतार लेने का वरदान देते हैं। भगवान के वरदान के अनुसार विक्रम संवत् 1508 भादवा वदी अष्टमी के दिन अभावों से परिपूर्ण मरुभूमि में भगवान जम्भेश्वर का अवतार होता है।

तालछापर का पावन विष्णुधाम इसी पवित्र जगह पर बन रहा है। जहां जम्भेश्वर भगवान का ननिहाल भी है और लोहट जी की तपोस्थली भी, जहां भगवान विष्णु लोहट जी की भक्ति से प्रसन्न होकर पुत्र प्राप्ति का वचन भी देते हैं। इसलिए यह तीर्थ स्थल बिश्नोई समाज का प्रथम तीर्थ स्थल भी है। पर्यटन के लिहाज से देखा जाए तो यह धाम इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके ठीक सामने राजस्थान का अति-विशिष्ट कृष्णमृग अभ्यारण्य

भी है। वैसे भी भगवान जाम्भोजी ने जीवों पर दया की बात बार-बार दोहराई थी। जहां-जहां हिरण, मोर जैसे भोले पशु-पक्षी निडर होकर विचरण करते हैं वहां पर परमात्मा की अतीव कृपा भी होती है और परमात्मा की अत्यन्त कृपा से ही आचार्य संत स्वामी रघुवरदयाल जी के अंतर्मन में इस जगह श्री विष्णुधाम बनाने का विचार आया। जब किसी संत के मन में कोई महान् कार्य का विचार आता है तो हजारों हाथ समर्थन में खड़े हो जाते हैं।

विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी

क्योंकि भगवान विष्णु ही समस्त जगत के पालनकर्त्ता है। नीले समुद्र में शेषनाग की शैय्या पर विराजमान मंद-मंद मुस्कराते नारायण ही समस्त जीव-जगत के संचालक हैं।

भगवान नारायण ही हमारे सत्-संकल्पों को साकार रूप देने वाले हैं। जरूरत है हमारे संकल्प प्रह्लाद की तरह मजबूत हो।

भगवान विष्णु से सही प्रार्थना है कि बिश्नोई समाज सदा अच्छाइयों से परिपूर्ण हो। सबके मन में प्रेम का प्रवाह हो, नशे का नाश हो, सद्कर्मों का इंसान के भीतर निवास हो, पर्यावरण का विकास हो, हिरण-मोर नाचते-गाते हो, दूध-घी की नदियां अविरल बहती हों, गौ-माता भूखी प्यासी बिलखे नहीं।

पूर्ण विश्वास है, श्री विष्णुधाम ऐसा भव्य धाम बनेगा जहां की भूमि पर लोगों के मन में अद्भुत शांति का अहसास होगा। लोगों की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान होगा। भागमभाग जिन्दगी और भौतिकता कर अंधी दौड़ में भी विष्णुधाम का दूसरा नाम '**मानव मन की शांति का केंद्र**' होगा इस तरह का विश्वास है।

❐ **चन्द्रभान बिश्नोई (अध्यापक)**
गांव एकलखोरी, त. ओसियां,
जिला जोधपुर (राज.)
मो. 9929590750

शिकारियों से लड़ते हुए उमाराम जाट ने दिया बलिदान

कोई भी कर्त्तव्य कैसे निभाया जाए यह सीख दे गयी स्व. उमाराम चौधरी की शहादत (7 सितम्बर, 2015)। दो कर्त्तव्यों का एक साथ निर्वहन कर गया धरती पुत्र पहला राजकीय सेवा की प्रतिबद्धता और दूसरा मूक प्राणी के प्रति दिल में अथाह प्रेम। भला प्रकृति संरक्षण और राष्ट्र रक्षा का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा? राजकीय सेवक रूप में समय की प्रतिबद्धता का पालन तथा प्रकृति प्रेमी के रूप में मूक प्राणी के लिए सर्वस्व अर्पण। शहीद बन्धु उमाराम चौधरी की दरयादिली और निर्भिकता को सलाम, नमन... प्रकृति का महान पुजारी मरा नहीं जिन्दा है... मेरे दिल में, आपके दिल में और हम जैसे करोड़ों प्रकृति प्रेमियों के दिल में और तब तक जिन्दा रहेगा जब तक इस पृथ्वी का अस्तित्व रहेगा। युग युगांतर तक जब-जब प्रकृति और वन्य जीव संरक्षण की बात आयेगी तब-तब शहीद उमाराम चौधरी की शहादत एक प्रेरक कथा बनकर हमारा और आने वाली सहस्त्रों पीढ़ियों का मार्गदर्शन करेगी। जाट बन्धु के इस अतुलनीय व अनुकरणीय बलिदान को नमन...

'शहीद का दर्जा, आर्थिक पैकेज, परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, शौर्य चक्र से सम्मानित करने और भविष्य में ऐसी घटना न हो इसके लिए शिकारियों को कठोर सजा का प्रावधान हो, के लिए केंद्र सरकार से बातचीत व गांव में शहीद स्मारक की मांगें मुख्य थीं। इन मांगों को लेकर पुलिस महानिरीक्षक गिरीराज मीणा, जिला पुलिस अधीक्षक संतोष चालके ने इसके बाद दो जिलों के पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों की मौजूदगी में जवान के पैतृक गांव में गार्ड ऑफ आनर देकर अंतिम विदाई दी। एक बहुत ही दु:खद घटना घटित हुई। फिर एक जीव प्रेमी भाई ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये एक जीव को बचाने के खातिर। फिर हम उन शिकारियों के सामने बेबस बन कर रह गये। कब तक चलेगा यह सब। जीव प्रेमी तो हसंते-हसंते अपने सीने पर गोली खा लेता है। पर कब तक हम बलिदान देते रहेंगे और प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा रहेगा। सांवरीज और कापरड़ा में जब कुछ शिकारियों और जीव रक्षकों के बीच हिंसा हुई तो उनमें जीव रक्षकों को ही जेल में डाला गया। ऐसी घटनाओं से मनोबल टूट जाता है पर 'शहीद शैतान सिंह, शहीद उमाराम' जैसे वीर सपूत अपनी कुर्बानी देकर हमें नींद से जगाकर जीवों के लिए कुछ करने की चुनौती दे जाते हैं। अब भी कुछ नहीं किया तो फिर कभी कुछ नहीं होगा। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने शहीद के परिवार को 5 लाख रुपये आर्थिक सहयोग के रूप में देने की घोषणा की है।

-**प्रमोद ऐचरा,** हिसार

मन की बात

आज लिखते-लिखते मन की बात जुबां पर आ गई।
कैसे कहे वो बात जो दिल को मेरे रूला गई॥

जून माह के प्रथम चार दिनों के लिए मुझे किसी के साथ मेहन्दीपुर श्री बालाजी धाम के दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर दर्शन के लिए आए। अनेकों भक्तों को कूदते-झूमते देखकर आभास हो रहा था कि उनपर भूत-प्रेतों का साया है और यह वास्तविकता भी है कि जिन आत्माओं की मुक्ति नहीं होती वे ऐसे ही भटकती हुई भूत योनी में आकर कुछ आत्माएं दूसरों को कष्ट देती हैं। पर हम उस सत्यता को भूल गए कि गुरुवर जाम्भो जी ने शरण में आने वाले ऐसे भक्तों के ऊपर से उन भटकती आत्माओं (भूत-प्रेतों) को वश में करके दोनों का कल्याण किया है। तभी तो उस आत्मा (प्रेत) ने (जिससे मेरा सामना हुआ) मना कर दिया। अर्थात् जिन पर वह प्रेत आत्मा आई। तो मैंने कहा बोल जय जाम्भो जी तो उसने कहा नहीं बोलूंगा। वाद-विवाद होता रहा। वह मुक्त होने के भय से गुरु जी का नाम न ले सका और बोला तू नेक इन्सान है।

दो-तीन बिश्नोई बन्धुओं के नाम भी इधर-उधर पढ़ने को मिले और सत्य भी है कि मानव अपने कष्टों से दु:खी होकर किसी न किसी के द्वार को अवश्य ही खटखटाता है। चाहे उस द्वार पर मुक्ति मिले या न मिले। हर एक द्वार पर ऐसे कष्टों को हरने की अर्थात् जड़ से समाप्त करने की औषधि नहीं मिलती और यह औषधि भी अपना असर तभी दिखाती है जब औषधि लेने वाले का औषधि देने वाले पर अटल विश्वास हो और यह विश्वास होना भी परम आवश्यक है। जैसा कि इस्लाम धर्मियों का अपने संस्थापक मो. साहब में व उनके द्वारा बताए एक निराकार खुदा में सच्चा व अडिग विश्वास है जो किंचित मात्र भी डगमगा नहीं सकता। ठीक ऐसे ही विश्वास की आवश्यकता जाम्भोजी के भक्तों को है।

गुरुवर जाम्भोजी ने निराकार विष्णु भगवान की उपासना करने पर जोर दिया है अर्थात् एक ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करो। ऐसा करने से कोई भी कष्ट या प्रेत आत्मा उस विश्वासी भक्त के पास नहीं भटक सकती क्योंकि भगवान विष्णु जी के अवसर रूप श्री राम जी के परम भक्तों में भक्त हनु ब्रह्मचारी अर्थात् हनुमान (बाला) जी हैं। जो अपने स्वामी के भक्तों पर आए कष्टों का निवारण करने के लिए हर क्षण आगे रहते हैं। ऐसे कष्ट हमेशा उनको आकर परेशान करते हैं। जिनका विश्वास अपने मार्गदर्शनकर्ता में नहीं है अर्थात् डगमगाता रहता है। अन्दर से आत्मविश्वासी बनो और एक ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करो।

पेड़ के पत्तों पर पानी गेरने से कहीं ज्यादा फल पेड़ के मूल (जड़) में पानी गेरने से प्राप्त होता है। अगर किसी को इस प्रकार का कोई भी संकट है तो वह घर में तीन से सात आहुतियों का गायत्री मंत्र से जाम्भोजी का स्मरण करते नियमित छोटा सा होम करे व प्रतिमाह की अमावस्या को गुरुवर जाम्भोजी के किसी भी मन्दिर पर जाकर यज्ञ करे व करवाए। प्रसाद के रूप में स्वेच्छा से जो भी लाए हो गुरु जी के आगे रखकर अपने कष्टों के निवारण हेतु हाथ जोड़कर विनय करें और सामग्री की आहुतियों के साथ-साथ उस प्रसाद की तीन से सात आहुतियां हवन कुण्ड की यज्ञाग्नि में देवें और बाकी बचे प्रसाद को जितना संभव हो सके अपने परिचितों व परिवार के सदस्यों में श्री विष्णु जी का प्रसाद मानकर सप्रेम भेंट करें तथा प्रसाद का एक भी कण पैरों में न गिरे। भिखारियों को प्रसाद अपनी श्रद्धा के अनुसार दें या न दें पर पक्षियों को उनका दाना (चुग्गा) प्रसाद के रूप में देना न भूलें। लगातार कुछ अमावस्या ऐसा करने से आपके सभी संकट अवश्य कट जाएंगे तथा जब कभी विचार बने सपरिवार या अपनी संग मंण्डली (साथियों) के साथ गुरुवर जाम्भोजी की तपो भूमि व समाधि स्थल के दर्शन कर अवश्य लाभ उठाएं और वहाँ पर नियमित रूप से होने वाले यज्ञ में आहुतियां देना न भूलें। ऐसा करने व गुरुवर जाम्भोजी के स्मरण का मन से आपको पूर्ण फल की प्राप्ति होगी। अनेक द्वारों पर भटकने से अच्छा है। अपने ईष्ट देव व एक ईश्वर में विश्वास करो और संकट मुक्त रहो।

-हरिओम बिश्नोई
गुरुद्वारा रोड, नई बस्ती, बिजनौर (यू.पी)
मो. 9012339705, 9917610327

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण

पर्यावरण :– हम पृथ्वी पर तरह–तरह के परिवेशों में रहते हैं। यह परिवेश ही हमारा पर्यावरण है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों से बना है – 'परि' + 'आवरण' परि शब्द का अर्थ है –चारों ओर से तथा आवरण शब्द का अर्थ है – ढके या घेरे हुए। इस प्रकार पर्यावरण शब्द का अर्थ समग्र रूप में यह है – जो हमसे अलग होने पर भी चारों ओर से ढके या घेरे हुए है। इस प्रकार किसी जीव या वस्तु को जो वस्तुएं, विषय, जीव एवं व्यक्ति आदि प्रभावित करते हैं, वे सब उसके पर्यावरण के ही अंग हैं।

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना:– संस्कृत वाङ्मय में प्रारम्भ से ही प्रकृति के इन तत्त्वों के संरक्षण के लिए प्रयत्न किया गया। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद से प्रारम्भ करें तो हम देखते हैं कि वैदिक ऋषि प्रकृति की भिन्न–भिन्न शक्तियों को ही विभिन्न देवताओं के नामों से संबोधित कर सुन्दर–सुन्दर स्तुतियों से उनकी उपासना करते हैं। ऋग्वेद ही क्यों सम्पूर्ण साहित्य प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूपों का गुणवान ही प्रतीत होता है। प्रकृति के ये नानाविध रूप विभिन्न देवताओं के रूप में आते हैं। इन देवताओं का लीलाक्षेत्र पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा भूगोल में बंटा है। यद्यपि वैदिककाल में सृष्टि साम्यावस्था में थी, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या नहीं थी परन्तु मानव स्वभाव को जानने वाले ऋषियों ने वैदिक वाङ्मय में जीवन की इस प्रकार से व्याख्या की जिससे पर्यावरण की समस्या उत्पन्न भी हो तो उसके समाधान जुटाने का प्रयत्न वैदिक ऋषि की यह सजगता और जागरूकता वैदिक साहित्य में पदे–पदे परिलक्षित होती है। प्रदूषण से बचने, स्वस्थ जीवन प्राप्त करने के लिए वैदिक ऋषियों ने पर्वतों का समीप्य तथा नदियों के संगमों को चुना।[1] पर्वतों की उपत्यकाएं तलहटियों तथा नदियों के संगमों का पर्यावरण शांत और शुद्ध होता है। वहाँ अध्ययन करना विचार– विमर्श करना, काव्य–सृजन करना फलदायक है। वैदिक ऋचाएं नदियों के तट पर ही रची गई। वैदिक काल में व्यक्ति का प्रकृति के साथ एक भावात्मक एवं रागात्मक सम्बन्ध इसी समीप्य के कारण उत्पन्न हुआ। यही कारण है कि वैदिक ऋषि सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी माता के रूप में उद्घोषित करता है।[2] इसी रागात्मकता के कारण द्यौ (आकाश) पिता बनता है। पृथ्वी और द्यौ (आकाश) के मध्य प्रकृति की विचित्र लीलाएं मानव मात्र के दिन–प्रतिदिन के अनुभव के विषय हैं। प्रात: काल प्राची दिशा में सूर्य से आती हुई स्वर्णिम उषा मानो अंधकार के वस्त्र को चीरती हुई आती है।[3] अंधकार को दूर करने वाले सूर्य की भी विभिन्न रूपों में स्तुति वैदिक ऋषि ने की है। पर्यावरण को समृद्ध करने में सूर्य का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। वह जल, पृथ्वी का शोधन करता है, कृमियों का नाश करता है तथा संसार की वृद्धि एवं पोषण का कर्ता है। सभी पदार्थों का प्रसव हेतु होने के कारण उसे सविता कहा गया है। यही दृष्ट और अदृष्ट सभी यातुधानों का नाशक है।[4] आकाश के प्रदूषण को कोलाहल कम करके रोका जा सकता है। प्राचीन ऋषियों ने इसलिए मौन धारण को विशेष महत्त्व दिया था।[5] अर्थात् हम मौन धारण करके प्रसन्न रहें और वायु के आधार से रहें। कम बोलने से शक्ति का संचय होता है। इस बात को आधुनिक शरीर क्रिया–विज्ञान भी स्वीकार करता है और यदि बोलना ही पड़े तो मधुर वचन बोलें।[6] सामवेद जो कि भारतीय संगीत का आधार ग्रंथ कहा जा सकता है। इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। सामवेद का गायन एवं अन्य वेदमंत्रों का सस्वर पाठ वातावरण में शांति का संचार करता था।

वायु का शोधन करने के संकेत भी वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं। मौन–भाव धारण करने वाला मुनि वात (प्राण वायु) या वायु (सामान्य वायु) का मित्र होता है। वायु को शुद्ध करने का उपाय यज्ञ रूप में वर्णित है। इसलिए यज्ञ को 'श्रेष्ठतम क्रम' कहा गया है। यज्ञ के धूप से वायु शुद्ध होती है। अग्नि में पड़ कर हवा जब फैलती है तो उसके परमाणु सभी दिशाओं में फैलते हैं। इसलिए व्यक्ति को ब्रह्मयज्ञ, अग्नियज्ञ, भूत, पितृ यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ करने के लिए कहा जाता है। सोमया: अग्निहोत्र आदि कर्म इसी दिशा में सहायक होते हैं। इन यज्ञों में वायु, जल पृथ्वी सभी का प्रदूषण नष्ट होता है। धूप से मेघ आते हैं। मेघ से वृष्टि होती है। अनावृष्टि के समय वृष्टियोग करके वृष्टि करवाई जा सकती है। विश्व के कई स्थानों पर 'अग्निहोत्र' का प्रयोग करके पर्यावरण शुद्ध के सफल प्रयत्न किए गए हैं।[8] अग्नि स्वयं ही सबको पवित्र करने वाली है। उसका उचित प्रयोग मनुष्य के लिए कल्याणकारी है। इसलिए ऋग्वेद का प्रारम्भिक मंत्र अग्नि को ही समर्पित है।[9]

वैदिक साहित्य में जल ही जीवन है ऐसा माना गया है। वैदिक संध्या में सर्वप्रथम जल का आचमन तथा विविध अंगों का प्रेक्षण किया जाता है। जल प्रदूषित न हो इसलिए तैतिरीय आरण्यक में कहा गया है कि जल में मल–मूत्र त्याग नहीं करना चाहिए।[10] अथर्ववेद में जल को अमृत एवं औषधि के

गुणों से युक्त बताया गया है।[11] जल सब रोगों से मुक्त करता है।[12] इसलिए वैदिक ऋषि प्रार्थना करता है कि जल सबके लिए कल्याणकारी हो।[13] सभी प्रकार के जलों में वर्षा का जल पर्यावरण का विशेष शोधक है। इसलिए पर्जन्ययुक्त में मेघ को सम्पूर्ण विश्व को आनन्द प्रदान करने वाला बताया गया है।[14] इसी अमृतोपम जल से वनस्पतियाँ, औषधियाँ पैदा होती हैं। हरे-भरे वनों की हरीतिमा से प्रकृति का वातावरण शीतल, सुखद होता है। वायुमण्डल से कार्बन डाईऑक्साइड को ग्रहण कर वन ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जो व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा करती है। यही कारण है कि वैदिक साहित्य में स्थान-स्थान पर वनस्पतियों के, औषधियों के गुण गाए गए है। औषधियाँ विश्व का माता के समान भरण-पोषण करती है और उनकी रक्षा करती है।[15]

शतपथ ब्राह्मण का मत है कि औषधियाँ प्रदूषकों का अवशोषण करती हैं।[16] अथर्ववेद में कई शक्तिदायक पौधों के नाम का उल्लेख किया गया है। अश्वत्थ को तो 'देवसदन' कहा गया है क्योंकि वह सदैव ऑक्सीजन उत्सर्जित करता रहता है।[17] इसी संदर्भ में ऋग्वेद के अरण्यानी सूक्त का उल्लेख भी आवश्यक नहीं होगा क्योंकि यहाँ वनों की महिमा बताई गई है। वन किसी को कष्ट नहीं देते। किसी पर आक्रमण नहीं करते तथा खाने को लिए मीठे फल देते हैं।[18]

आज के युग में भी वृक्षारोपण[19] वन महोत्सव जैसे कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार से वैदिक साहित्य में पर्यावरण को सुखद और शांतिपूर्ण बनाने के लिए हर दिशा में प्रयत्न किए गए हैं तथा सब ओर शांति बनी रहने के लिए प्रार्थना की गई है।[20] वैदिक साहित्य के पश्चात लौकिक संस्कृत साहित्य पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि वाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण में भी प्रकृति के प्रति अनुराग की भावना स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होती है। आदिकवि ने अपने नायक को जिन प्राकृतिक स्थलों में उपस्थित किया, उनका वर्णन या तो नायक के मुख से [21] या स्वयं कवि ने विशद रूप में किया है। प्रकृति के पूर्ण एवं संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। रामायण काल में प्रत्येक ग्राम एवं नगर में कृत्रिम वन, उपवन प्रमदवन, क्रीड़ा वन थे। सुग्रीव की किष्किन्धा में बहुत बड़ा और अत्यन्त सुन्दर मधुवन प्रसिद्ध था। ये सब वातावरण को सुन्दर और सुखद बनाने के साथ-साथ पर्यावरण की रक्षा में भी सहायक थे। सम्भवत: यही कारण था कि रामराज्य में सभी लोग दीर्घायु, स्वाध्यायशील और धर्मनिष्ठ थे। किसी को दैहिक, दैविक व भौतिक ताप व्याप्त नहीं होते थे।[22] महाभारत एक ऐतिहासिक ग्रंथ है, पर वहाँ भी विभिन्न सन्दर्भों में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है। महर्षि वेदव्यास है श्रीमद्-भागवद्गीता में यज्ञ के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है- यज्ञात् भवति पर्जन्य: यज्ञ कर्मसमुद्भव: ।[23]

रामायण-महाभारत के पश्चात् पौराणिक काल में भी प्रकृति के साथ मानव के इस घनिष्ठ सम्बन्ध की व्याख्या पाई जाती है। अग्नि पुराण में कहा गया है - 'यदि कोई व्यक्ति अपने वंश, धन और सुख में वृद्धि की कामना करता है तो वह फल, फूल वाले किसी वृक्ष को न काटे। संस्कृत के परवर्ती युग में भी कवि प्रकृति के उपासक रहे हैं। मानव प्रकृति के भावों को समझने और परखने में जितने सिद्ध हस्त हैं, उतने ही बाह्य प्रकृति के रहस्यों को परखने तथा उद्घाटन करने में समर्थ हैं। प्रकृति संस्कृत-काव्यों में आलम्बन तथा उद्दीपन उभय रूपेण चित्रित की गई है तथा उद्दीपन रूप में उसको मानव-प्रकृति के ऊपर उत्पन्न प्रभाव का वर्णन होता है। भास आदि कालिदास के पूर्ववर्ती कवियों के काव्य में प्रकृति के एक से एक सुन्दर चित्र प्राप्त होते हैं। तपोवन.. भारतीय-संकृति का एक अविभाज्य अंग है। भास... स्वप्नवासवदत्तम् में तपोवन का चित्र है - 'जहाँ हरिण... स्थान के प्रति उन्हें पूर्ण विश्वास होने के कारण निराश होकर बेखटके इधर-उधर घूम रहे हैं, यहाँ के सब वृक्ष दया से अच्छी प्रकार सुरक्षित हैं, उनकी शाखाएँ पुष्पों और फलों में समृद्ध हो रही हैं। चारों दिशाओं में कोई खेत भी नहीं दिखाई देते और गहरे कपिल वर्ण की बहुत सी गायें घूम रही हैं तथा अनेकों स्थानों से यज्ञ का धुआं निकल रहा है। इसलिए यह नि:संदेह तपोवन है।[25]

निष्कर्ष: स्पष्ट होता है कि प्रकृति भी मनुष्य के सुख-दु:ख में उसके साथ हंसती-रोती है। प्रकृति और मानव के इस घनिष्ठ सम्बन्ध को आज के युग में जबकि मानव प्रकृति से दूर होता जा रहा है फिर से सजाने- संवारने की आवश्यकता है। जैसे 'धर्म: रक्षति रक्षित:' अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। वैसे ही पर्यावरण की यदि हम रक्षा करेंगे तो पर्यावरण हमारी रक्षा करेगा। इसी में सबका कल्याण है।

संदर्भ: 1. यजुर्वेद, 26.16; 2. अर्थर्ववेद, 12.1.12; 3 ऋग्वेद, 3.61.4; 4. वही, 1.191.8; 5. वही, 10.136.3; 6. अथर्ववेद, 1.34; 7. घण्टा ध्वनि एवं शंख ध्वनि में कई प्रकार के रोगों का निवारण आज के युग में भी किया गया है। 8. अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान की दृष्टि में- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती। 9. ऋग्वेद, 1.1.1; 10. तैतिरीय आरण्यक, 1.26.7; 11. अथर्ववेद, 1.4.4; 12. वही, 3.75; 13. ऋग्वेद, 10.9.4; 14. वही, 5.83.

9; 15. वही, 10.97.4; 16. शतपथ ब्राह्मण, 2.2.4.5; 17. अथर्व वेद, 54.3; 18. ऋग्वेद, 10.146.5; 19. यजुर्वेद, 6.22; 20. वही, 36.17; 21. अयोध्याकाण्ड, संध्या वर्णन; 22. किष्किन्धा काण्ड, 7.99.13; 23. श्रीमद्भगवद् गीता, 3.14; 24. अग्नि पुराण, 7.8.8; 25. भास, स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथम अंक, श्लोक 12

–डॉ. ओमप्रकाश
संस्कृत प्रवक्ता, रा.व.मा. विद्यालय, भादसों (करनाल)

युवाओ परिस्थितियों के गुलाम मत बनो

बिश्नोई समाज विश्व का एक पवित्र समाज है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने बिश्नोई समाज की स्थापना कर हमें एक अनमोल धरोहर प्रदान की है। परन्तु आज यह समाज अपने नियमों की अनदेखी कर रहा है। मैं युवाओं को कहना चाहूँगा कि समाज की प्रगति में भागीदार बनें। युवाओं को हमेशा हौंसले के साथ जीवन जीना चाहिए। चाहे कुछ भी हो जाए आशा नहीं छोड़नी चाहिए। हमेशा आशावादी रहना चाहिए।

"चल तू मंजिल की राह पर, खुद को बेकरार मत कर,
हार भी जीत बन जाएगी, खुद पर यकीन तो कर।"

इस युग में इंसान चलता है मंजिल की चाहत में दु:खों का सामना हिम्मत से करता है, पर हिम्मत भी हार मानने को मजबूर हो जाती है। आखिर क्यों, क्योंकि निराशा का दामन थामने से आशा खो जाती है। जिंदगी जीने का मकसद खत्म हो जाता है। इसलिए युवाओं हमेशा ऊर्जावान रहना चाहिए। ऊर्जावान युवा समाज को बहुत कुछ दे सकता है। आज के दौर में बिश्नोई समाज के अनेक युवा अपने लक्ष्य से भटक रहे हैं। अनेक तरह के नशे में धुत रहते हैं। कई-कई युवा तो 29 में से 10 नियम का पालन भी नहीं कर पाते हैं। यह बड़ी विकट समस्या है। समाज के युवाओं को सोचना चाहिए कि युवा होकर, बिश्नोई समाज में जन्म लेकर गलत कार्यों में लिप्त रहते हैं। यह शर्म की बात है।

युवाओं को भलाई के कार्य करने चाहिए। पर्यावरण संरक्षण व नशामुक्ति का अभियान शुरू करना चाहिए। समाज में अशिक्षा, बालविवाह, मृत्युभोज जैसी समस्याओं पर काम करना चाहिए। कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। समाज के अनेक युवा, अच्छे कार्य भी कर रहे हैं। मेलों के अवसर पर पर्यावरण की स्वच्छता हेतु अभियान में युवाओं की भागीदारी सराहनीय है।

समाज सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं होती है। किसी भी समाज का विकास उस समाज के युवाओं पर निर्भर है। जितने ज्यादा समाज-सेवक होंगे, उतना की समाज का भला होगा। बुराई पर अच्छाई की जीत होगी। गलत बातें समाज का रूप बिगाड़ सकती है और अच्छी आदतें समाज का रूप संवार सकती हैं। गलत आदतें समाज का पतन कर सकती हैं और अच्छी आदतें समाज को सर्वश्रेष्ठ बना सकती हैं। हमें बिश्नोई समाज से बुरी आदतों को निकालकर अच्छी आदतों का विकास करना है। नियमों का पालन सख्ती से करना चाहिए। 29 नियमों में हर नियम एक से बढ़कर एक है। किसी भी नियम को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

जिस तरह एक माँ के लिए सभी संतान समान होती हैं उसी तरह सभी नियम समान हैं। इसके अलावा युवाओं को संस्कार के लिए बिश्नोई भाइयों व बहिनों को जागरूक करना चाहिए। संस्कार निर्माण अभियान हर घर में चलना चाहिए। हर घर में सामूहिक रूप से सुबह-शाम भजन व आरती होनी चाहिए। इससे बच्चों में धार्मिक संस्कार पनपते हैं। बच्चे आगे जाकर अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। बच्चों में गलत कार्यों के प्रति भय पैदा करना चाहिए। घर के बुजुर्ग बच्चों को पाप व पुण्य के बारे में बताएं। प्रत्येक को सुधार की शुरूआत अपने आप से करनी चाहिए। धीरे-धीरे सम्पूर्ण समाज का सुधार हो जाएगा।

युवा किसी भी समाज की सम्पत्ति होता है। धरोहर होता है। इसलिए बिश्नोई समाज का युवा अगर समाज में सुधार की ठान ले तो सब कुछ सुधर सकता है। मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिए।

'मुश्किलों में हौसला काम आता है,
अगर हो हौसला तो इंसान जीत जाता है।'

युवाओं को मजबूत हौसले के साथ आगे बढ़ना चाहिए। अंत में एक ही बात कहना चाहूँगा – **"युवा दोस्तों कभी भी परिस्थितियों के गुलाम मत बनिए, मैदान में डटे रहिए जब तक मंजिल नहीं मिल जाती।"**

सुनिल जाँगू (सिदाणी)
प्रशिक्षण अध्यापक,
ग्राम फतेहसागर, पीलवा,
त. लोहावट, जिला जोधपुर
मो. 9772039209

जम्भेश्वर वाणी : वेद वाणी भारत की संस्कृति

भारत अतुल सम्पदाओं का स्वामी और अनंत ज्ञान राशि का अक्षय भण्डार है। यहीं साक्षात महालक्ष्मी और महासरस्वती पारसमणि बन जाता, जिसके स्पर्श करके वह अपनी लौह-दरिद्रता को खोकर स्वर्ग सम्पदा और स्वार्णाभि व्यक्तित्व का स्वामी बन अध्यात्म की शिक्षा-दीक्षा पाकर धन्य होते थे। सुखी सम्पन्न जीवन जीने की कला प्राप्त करते थे। इस काल कौशल और आदान-प्रदान करने के लिए अपार धन सम्पदा, ज्ञान-विज्ञान के अनेक साधन-योग और अध्यात्मिक बल का सभी कारण इस देश का गौरव अति वैभव था।

दुनिया भर से आकर लोग यही के साधु-संतों-तपस्वियों से मिल कर आपार आनंद का अनुभव करते थे। हमें यह कल्पना आश्चर्यचकित कर देती है कि अपना भारत देश कितना साधन-सम्पन्न और ज्ञान-सम्पन्न होगा। प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से अन्य भी भारत जैसा है, फिर इस देश के निवासी कैसे इतने साधन सम्पन्न और ज्ञान सम्पन्न हैं कि स्वर्ग जैसी सुख-सुविधा से परिपूर्ण देव तुल्य जीवन यापन करते हैं और अपने ज्ञान दर्शन से संसार में प्रकाश फैलाते हैं।

वास्तविकता यह है कि भारतवासियों का चिंतन-मनन, दृष्टिकोण श्रेष्ठ मानवों जैसा दिव्य गुणों से परिपूर्ण है। वे अपने विकसित सद्‌गुणों के कारण सामान्य स्थिति में भी असाधारण ज्ञानोपार्जन व सम्पदा का सदुपयोग कर लेते हैं। अत: वे देव तुल्य जीवन जीते हैं। वे अपनी विभूतियों की सर्वत्र वर्षा करते हैं और अपने कर्त्तव्य का सद्‌परिणाम पाकर प्रसन्न रहते हैं।

किसी समय सुख-शांति और स्वर्गीय वातावरण के आनंदपूर्वक रहने वाला और समस्त विश्व को चाल चल रहा है। अभाव, असंतोष तथा अंधविश्वास से मानव दिन-प्रतिदिन पतन के मार्ग पर बढ़ रहा है। अपराधिक घटनाएं घटती है। अपने ही लोगों में भय की शंका की भावना उत्पन्न हो रही है। सामाजिक जीवन क्रोध व अक्रोश से ग्रसित हैं। आशंका और निराशा की स्थिति में सुख-शांति की कल्पना करना व्यर्थ है।

इस विषय परिस्थिति में मनुष्य के सामने यही प्रश्न है कि वह जिस प्रकार सुख-शांति की दिशा में प्रगतिशील कदम उठाये। यह आज भी पहले जैसा सच है कि मनुष्य उत्कृष्ट चिन्तन के आधार पर अपने कर्त्तव्य का पालन करे और आदर्शवादिता का वातावरण तैयार करे, जिसमें विविध प्रकार की समस्याओं का समाधान सम्भव होगा। यही भारत की गौरव-गरिमा या गुरुगरिमा का विकास, समाज में सुख-शांति प्रदान कर सकेगा।

अत: यह पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है कि सबदवाणी भगवन जंभेश्वरजी के मुख से निसृत वेद वाणी है। जिसका एक शब्द भी सदुपदेश से रहित नहीं है। भगवान वेद व्यास जी के वाक्य का अनुसरण करते हुए यह संदेश प्राप्त होता है कि परम गुरु जंभेश्वर जी का उपदेश प्रत्येक मानव मात्र को धारण करने योग्य है। उनकी सबदवाणी को भली प्रकार पढ़कर, समझ कर अर्थ के भाव को हृदयंगम करके धारण करना हम सबका परम कर्त्तव्य है। निश्चित रूप से सबदवाणी धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रदायिनि है।

- योगेन्द्रपाल सिंह बिश्नोई
कृष्णपुरी, लाइनपार, मुरादाबाद
उत्तर प्रदेश

विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी, पैंके लाख उपाजूं।
रतन काया वैकुण्ठे वासो, तेरा जरा मरण भय भाजूं॥

- सबदवाणी

जन्माष्टमी महोत्सव हिसार : एक झलक

हिसार: बिश्नोई समाज एक उत्सव धर्मी समाज है। इस समाज में वर्ष भर में अनेक मेले एवं त्यौहार अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। परन्तु बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी के उत्सव पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की शोभा अलग ही होती है। गत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी महापर्व 5 सितम्बर, 2015 को धूमधाम से मनाया गया। महीने भर पहले ही इस उत्सव की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी थी। मन्दिर में जहां साफ-सफाई व सजावट का कार्य चल रहा था वहीं सभा के पदाधिकारी गाँव-गाँव घूमकर इस महापर्व का निमन्त्रण दे रहे थे। 4 सितम्बर तक सभी तैयारियां अपने चरम पर थी और मन्दिर प्रांगण जन्माष्टमी महापर्व का साक्षी बनने के लिए सज धज कर तैयार था। सेवकों का आगमन और मेहमानों का स्वागत एक रमणीय वातावरण की सृजना कर रहा था। 5 सितम्बर को प्रात: ही स्वामी रामानन्द जी आचार्य, मुकाम के सान्निध्य में विशाल यज्ञ व पाहल का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञ पश्चात् सभा प्रधान श्री सुभाष देहडू के नेतृत्व में ध्वजारोहण किया गया। ठीक प्रात: 10 बजे मुख्य कार्यक्रम के लिए मंच तैयार था। मेहमानों का आगमन व मंच संचालक डॉ. सुरेंद्र खिचड़ द्वारा उनका स्वागत कार्यक्रम को जीवन्तता प्रदान कर रहा था। 11 बजे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने मन्दिर प्रांगण में प्रवेश किया। जहां सभा प्रधान के नेतृत्व में बिश्नोई सभा, हिसार के कार्यकारिणी के सदस्यों ने उनका जोरदार स्वागत किया। मुख्य अतिथि महोदय ने यज्ञ में आहुति देकर पाहल ग्रहण किया।

मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई मंच पर पधारे जहां उपस्थित नेतागणों और गणमाण्य व्यक्तियों ने उनका अभिवादन किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ तारणहार साखी द्वारा किया गया। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री सुभाष देहडू ने आए हुए सभी अतिथियों व महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हुए बिश्नोई सभा, हिसार की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री देहडू ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का अवसर है जब गुरु महाराज के अवतार दिवस पर हम सब मंदिर प्रांगण में एकत्रित हुए हैं। आपने कहा कि बिश्नोई सभा हिसार सदैव समाज की सेवा में तत्पर रहती है। सभा का आगे भी यह प्रयास रहेगा कि समाज की चहुंमुखी उन्नति में अपना सर्वस्व योगदान दे। प्रधान जी ने सभा का मार्गदर्शन करने व सहयोग देने के लिए चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई का धन्यवाद किया व बिश्नोई रत्न स्वर्गीय चौ.

खुले अधिवेशन में मंचासीन अतिथिगण।

भजनलाल जी के योगदान को भी स्मरण किया। सभा सचिव श्री मनोहर लाल गोदारा ने सभा के आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। सेवक दल के प्रधान श्री सहदेव कालीराणा ने सेवक दल की गतिविधियों व अन्नदाताओं के सहयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला। गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली के प्रधान श्री हनुमान सिंह बिश्नोई ने दिल्ली में लड़कियों का छात्रावास प्रारम्भ करने बारे प्रयास करने की बात कही। श्री सुभाष गोदारा एडवोकेट ने आरक्षण को लेकर विशेष प्रयास करने का निवेदन किया। श्री हंसराज ज्याणी ने समाज सुधार बारे अपने विचार व्यक्त किए। श्री हरिसिंह मांझू, भादरा ने पर्यावरण संरक्षण पर विशेष बल दिया। श्री विनोद भादू ने शिक्षण संस्थान खोलने बारे अपने विचार प्रकट किए। अमानत बिश्नोई ने गऊ रक्षा पर कविता प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। श्री अरुण जौहर ने बिश्नोई समाज के पर्यावरण सम्बन्धी योगदान पर प्रकाश डाला। महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप मांझू ने सेरा स्नान धर्म नियम की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि फलौदी के विधायक पब्बाराम जी ने कहा कि बिश्नोई समाज का बड़ा गौरवमयी इतिहास है। इस समाज के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज ने अंधकार के युग में दुनिया को अपनी शिक्षाओं का प्रकाश देकर जीना सिखाया तथा वैदिक धर्म व संस्कृति को पुनर्जीवित करने का काम किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि पूर्व संसदीय सचिव श्री दुड़ाराम जी ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में स्त्री-शिक्षा और तकनीकी शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि हमें जमाने के साथ चलना चाहिए। आज युग विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का है इसलिए युवाओं को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपने कहा कि समाज और राजनीति को अलग नहीं कर सकते। यदि समाज तरक्की करना चाहता है तो उसे एकजुट होना पड़ेगा तभी हम अपनी खोई हुई राजनीतिक शक्ति को पुन: प्राप्त कर सकेंगे।

समारोह को मुक्तिधाम मुकाम के पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने भी सम्बोधित किया। आचार्य श्री ने अपने सम्बोधन में गुरु जम्भेश्वर भगवान की समकालीन परिस्थितियों और उनके अवतार के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने बताया कि 29 धर्म नियमों की आचार संहिता मानवता का कवच है। विश्व की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान इन 29 धर्म नियमों में न हो। कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में अध्यक्षता कर रहे श्री हीराराम भंवाल, अध्यक्ष अ. भा. बिश्नोई महासभा ने कहा कि आज पर्यावरण की समस्या ने पूरे विश्व को चिंता में डाला हुआ है। यदि गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों पर चलते तो आज यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होती। आपने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों को मानना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है। आपने कहा कि बिश्नोई पंथ स्वयं विष्णु भगवान द्वारा प्रवर्तित पंथ है इसलिए हमें इस पंथ में जन्म लेने का गर्व होना चाहिए। इसके बाद मुख्य समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए हजकां सुप्रीमो कुलदीप बिश्नोई ने समाज के लोगों से अपील की कि वे गुरु जम्भश्वेर महाराज के दिखाए रास्ते व नियमों पर चलें। उनकी शिक्षाओं व उपदेशों को अपने जीवन में उतारकर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करने में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि जब तक हम सब मिलकर गुरु जी की शिक्षाओं को आगे नहीं ले जाएंगे तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता। यही नहीं उनकी शिक्षाओं को दूसरे समाजों व संप्रदायों तक ले जाने की जरूरत है ताकि वो भी गुरु जी के दर्शन व विचारधारा के बारे में जानकर उन्हें अपना सकें। इस अवसर पर अ.भा. बिश्नोई महासभा की नवनियुक्त कार्यकारिणी का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में समाज की प्रतिष्ठित पत्रिका अमर ज्योति के विशेषांक का विमोचन श्री कुलदीप बिश्नोई ने किया।

इस अवसर पर श्री राजाराम खिचड़, कोषाध्यक्ष, बिश्नोई सभा, हिसार; श्री मनोहर लाल गोदारा, सचिव; उपप्रधान श्री रामकुमार कड़वासरा, श्री अमर सिंह मांजू, श्री हेतराम धारणिया, भगवानाराम फुरसाणी, श्री हीरालाल खोखर, प्रधान मध्यक्षेत्रीय बिश्नोई सभा, हरदा; श्री कृष्ण लाल बैनीवाल, श्री कृष्ण राहड़, श्री जगदीश कड़वासरा, अध्यक्ष श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति; श्री रामेश्वर डेलू; अध्यक्ष, जीव रक्षा बिश्नोई सभा, हरियाणा; श्री भूपसिंह गोदारा, प्रधान, बिश्नोई सभा, फतेहाबाद; श्री रामस्वरूप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, रतिया; श्री आसाराम लोमरोड़, प्रधान, बिश्नोई सभा, टोहाना; श्री रामस्वरूप जौहर, श्री रामसिंह कालीराणा, पूर्व आई.पी. एस.; श्री बुलसिंह बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, आदमपुर; श्री विनोद धारणियां, महासचिव, रामस्वरूप धारणियां,

सर्वधर्म सम्मेलन को संबोधित करते अनिल कुमार राव, आई.पी.एस.।

कोषाध्यक्ष, महासभा; श्री सुलतान धारणिया, प्रधान, जगतगुरु जम्भेश्वर गौशाला, मुक्तिधाम, मुकाम; श्री रामसिंह सिगड़, डायरेक्टर ई.एस.आई., श्री कृष्णदेव पंवार, हनुमान ज्याणी लालवास, श्री नरसीराम थालोड़, कामरेड बनवारी लाल, जगदीश पूनिया, भजनलाल फुरसानी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम में समाज के मेधावी विद्यार्थियों तथा समाजसेवियों को मुख्य अतिथि ने स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन

4 सितम्बर की शाम को मंदिर परिसर में मुख्य मंच पर सर्व धर्म का सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं हिसार रेंज के पुलिस महानिरीक्षक अनिल कुमार राव आइपीएस ने कहा कि भगवान की बनाई इस दुनिया में इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है। इसके बाद कोई धर्म है तो वो है राष्ट्र धर्म। लेकिन इंसानों ने अपने स्वहितों के चलते इसके कई रूप बना दिए जो तर्कसंगत व मानवता के हित में नहीं हैं। ऐसी धारणा से न केवल इंसानी जीवन का विकास रूकता है बल्कि समाज पिछड़ जाता है। सम्मेलन के अध्यक्ष मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानंद जी ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने बिश्नोई धर्म में सभी पंथों के लोगों को शामिल कर एक नव मानव धर्म की स्थापना की थी। उनके बताए नियमों पर अगर मानव जाति चले तो दुनिया में निश्चित तौर पर प्रेम व सामंजस्य की भावना विकसित होगी। प्रेम ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। सम्मेलन में सनातन धर्म प्रतिनिधि तौर पर बालकृष्ण भारती, मुस्लिम धर्म प्रतिनिधि मौलाना शमीम अहमद, सिख धर्म प्रतिनिधि सरदार सतनाम सिंह बाबा, ईसाई धर्म प्रतिनिधि रेवरन पी. मान, जैन धर्म प्रतिनिधि साध्वी रत्नप्रभा तथा आर्य समाज प्रतिनिधि नरेन्द्र वेदालंकार शामिल थे।

–**प्रमोद ऐचरा,** व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

मेहराणा धोरा धाम में जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया

पंजाब के पावन जाम्भाणी धार्मिक आध्यात्मिक केन्द्र मेहराणा धोरा धाम में जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। धाम के मंहत स्वामी मनोहरदासजी शास्त्री के पुण्य सान्निध्य में भगवान श्रीजाम्भोजी के पवित्र जन्मोत्सव के उपलक्ष में श्री जाम्भाणी हरिकथा का आयोजन किया गया। कथावक्ता समाज के युवा विद्वान और जाम्भाणी साहित्य मर्मज्ञ आचार्य स्वामी सच्चिदानंदजी लालासर साथरी थे।

इस कथा का साधना टीवी पर सीधा प्रसारण किया गया। कथा के अन्तिम दिन बिश्नोई प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया, जिसमें श्री राजेश कड़वासरा (अतिरिक्त जिला एवं सेशन जज), श्री विकास गोदारा (आईएएस) तथा नवचयनित आरएएस श्री बी.आर. बिश्नोई, श्री अनिल गोदारा, श्री श्यामसुंदर जाखड़, श्री देशराज खिचड़, श्री श्यामसुंदर बैनिवाल, श्री माँगीलाल बागड़िया, श्रीमती उषारानी, श्रीमती राजकुमारी बिश्नोई, श्री विनोद गोदारा, श्री बजरंग कुमार गोदारा, श्री प्रेमसुख डेलु, श्री सहीराम बिश्नोई, श्री राजीव सांवक को सम्मानित किया गया। पुलिस में सब-इंस्पेक्टर पद पर चयनित कु. संध्या बिश्नोई और अलका बिश्नोई को भी सम्मानित किया गया। श्री सुरेन्द्र गोदारा (पूर्व प्रधान बिश्नोई सभा पंजाब), श्री निरजंनलाल खिचड़, श्री संजय भादू को भी समाज की उत्कृष्ट सेवाओं के लिये सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. (डा.) हरमोहेन्द्र सिंह बेदी तथा विशिष्ट अतिथि प्रिंसिपल श्री सुरेन्द्र सहारण संगरिया, श्री सुभाष बिश्नोई रतिया थे।

इस समारोह का आयोजन महंत मनोहरदास जी शास्त्री के मार्गदर्शन में मेहराणा धोरा धाम और अ.भा. गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के तत्वावधान में स्वामी राजेन्द्रानन्द जी महंत लालासर साथरी, स्वामी कृष्णदासजी फलाहारी, स्वामी भगवान प्रकास जी, स्वामी मनमोहनदास जी, स्वामी मोहनदास जी और अनेक संतो की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सतपाल थापन सरपंच, सुशील कड़वासरा सरपंच, सुरेन्द्र सिहाग प्रधान सेवक दल अबोहर, विष्णु थापन, विजय थापन, राजेन्द्र डेलू, सुशील बैनीवाल, एडवोकेट कृष्णलाल, श्रवण सिहाग, रामकुमार डेलू, आर.डी. बिश्नोई, प्रवीण गोदारा, डा. विपलेश भादू, सुभाष थापन, राधेश्याम सिंवर, नरेन्द्र धारणियाँ, विनोद सिहाग आदि ने पधारे हुए मेहमानों का स्वागत किया। डा. बेदी ने पाकिस्तान आदि जगहों से जाम्भाणी साहित्य को इकट्ठा करने और श्रीजम्भवाणी का अंग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद करवाने की सलाह दी। अष्टमी की रात को जागरण में अपनी संगीत मंडली के साथ सुमधुर कंठ से आरती, साखी, भजन गाकर स्वामी सच्चिदानंद जी आचार्य ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जागरण में सुरेन्द्र सुन्दरम् जी ने कविताएँ सुनाई और संदीप धारणियाँ ने समाज के उत्थान के लिये विचार रखे। नवमी को सुबह हवन यज्ञ, पाहल हुआ और विशाल मेला भरा जिसमें आसपास और दूरदराज से पधारे हजारों लोगों ने भाग लिया। मेले के अवसर पर सेवक दल अबोहर ने रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया।

परम श्रद्धेय स्वामी श्री मनोहरदास जी शास्त्री (महंत मेहराणा धोरा धाम) अपनी स्पष्टवादिता के लिये जाने जाते हैं, इनके दिल में जाम्भाणी परम्परा और साहित्य के प्रचार-प्रसार की लगन हर समय रहती है। पंजाब क्षेत्र के बिश्नोई समाज के धार्मिक -आध्यात्मिक मुखिया होने के नाते क्षेत्र में नशे के दुष्परिणामों को लेकर ये हमेशा चिन्तित रहते हैं, जब हमने इनके समक्ष बिश्नोई प्रतिभाओं को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा तो ये अति प्रसन्न हुए और इन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का चैनल पर सीधा प्रसारण होना चाहिए और इन्होंने तुरंत फोन करके प्रसारण का एक घंटा अतिरिक्त ले लिया।

इन्होंने कहा कि इन प्रतिभाओं को सम्मानित करना हमारा कर्तव्य है। इन लोगों ने कितने कठोर परिश्रम से अपने मुकाम को हासिल किया है और इन लोगों के आने से युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन मिलेगा। स्वामीजी ने पंजाब की सभी बिश्नोई गाँवों की पंचायतों को पत्र जारी किया है कि वे अपनी-अपनी पंचायत में शराब का ठेका बन्द करने का प्रस्ताव पारित करें। लोगों को श्री जाम्भोजी के उपदेशों को जीवन में धारण करके नशे जिसे बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा ये अपने प्रवचनों में मुख्यत: देते। इनके चरणों में शत-शत नमन।

-**विनोद जम्भदास,** हिम्मतपुरा, पंजाब

जाम्भाणी हरिकथा एवं 41वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

सिरसा : बिश्नोई मन्दिर व धर्मशाला सिरसा के 41वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर प्रांगण में साप्ताहिक जाम्भाणी हरिकथा व सत्संग का आयोजन किया गया। 7 सितम्बर, 2015 से चली इस हरिकथा का श्रीगणेश हरिद्वार से पधारे स्वामी राजेन्द्रानन्द जी द्वारा हवन-यज्ञ व मन्त्रोचारण से हुआ। साप्ताहिक हरि कथा से पूर्व 5 सितम्बर जन्माष्टमी महापर्व पर भी मन्दिर प्रांगण में जागरण का आयोजन हुआ तथा अगले दिन प्रात: हवन यज्ञ व पाहल का कार्यक्रम रहा।

स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर 12 सितम्बर को सायं एक संगाष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के हाल में चयनित प्रतिनिधियों के सामने उपस्थित चुनौतियों/समस्याओं व उनके समाधान पर चर्चा की गई जिसमें पूर्व प्राचार्य श्री इन्द्रजीत बिश्नोई, योग प्रशिक्षक श्री इन्द्राज जांगू, पूर्व शिक्षा अधिकारी श्री मनुदत कड़वासरा, श्री बलबीर राम पूनियां, श्री देशकमल बिश्नोई, छात्र विकास भादू व सी.ए. श्री राजगुरु कस्वां ने भाग लिया। श्री राजेन्द्रानन्द जी ने सभी चुने हुए प्रतिनिधियों को समाज के उत्थान के लिए काम करने की प्रेरणा दी। रात्रि को गुरु जम्भेश्वर भगवान का जागरण तथा प्रात: 13 सितम्बर को हवन यज्ञ व पाहल उपरान्त मुख्य समारोह का आयोजन हुआ।

मुख्य समारोह में कृभको नोएडा के उपमहाप्रबन्धक श्री नरेन्द्र जी भादू मुख्य अतिथि थे तथा अध्यक्षता स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने की। सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा सभा की गतिविधियों की जानकारी दी।

स्थापना दिवस समारोह में मंचासीन अतिथिगण।

समारोह में शिक्षा व खेलकूद में अव्वल स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। अंत में सभा प्रधान श्री खेमचन्द बैनीवाल ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। सहभोज/प्रसाद ग्रहण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मन्दिर परिसर में एक नि:शुल्क चिकित्सा शिविर भी लगाया गया। डा. सुरेश बिश्नोई व उनकी टीम ने अपनी सेवाएं दी।

डा. मनीराम सहारण
प्रचार सचिव, बिश्नोई सभा सिरसा
मो. : 098960-57532

डबवाली में मनाया गया श्री गुरु जम्भेश्वर जन्माष्टमी महापर्व

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का 565वां अवतार दिवस बिश्नोई धर्मशाला मंडी डबवाली के पवित्र प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 30 अगस्त 2015 को स्वामी राजेन्द्रानंद जी महाराज हरिद्वार के मुखारविन्द से श्री जम्भवाणी हरि कथा प्रारम्भ हुई। स्वामीजी ने सात दिन तक श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के 120 शब्दों में से 40 शब्दों की विस्तार से व्याख्या की व 29 नियमों के बारे में बताया। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्मोत्सव पर डबवाली शहर में 4.9.2015 को एक भव्य शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा का शहर के बाजार में हर जगह फूल मालाओं व तिलक लगाकर भव्य स्वागत किया गया। दिनांक 5.9.2015 को सुबह 7 बजे हवन की प्रक्रिया शुरू हुई। स्वामी जी ने 120 सबदों का पाठ हवन किया। इतने में ही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चौ. धर्मवीर जी गोदारा सीतोगुन्नों का पहुंचने पर फूल मालाओं से सभा द्वारा भव्य स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि ने हवन में आहुति दी। स्वामीजी ने पाहल बनाने की रस्म अदा की। सभी श्रद्धालुओं ने पाहल ग्रहण किया। सभा अध्यक्ष श्री कृष्णलाल जी जादूदा ने दो शब्दों में सभी का स्वागत किया व आभार व्यक्त किया। बरनाला से आए सरदार महिन्द्र सिंह राही की पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक का नाम 'जगडावाला टोबा' इस पुस्तक में उन्होंने बिश्नोई धर्म के बारे में जाम्भो जी का जीवन परिचय, 29 नियमों व अमृतादेवी बलिदान की पूरी कहानी लिखी है और वह इस पुस्तक को पंजाब के कई सामाजिक संस्थाओं में वितरित करेंगे और सरदार जी ने बिश्नोई धर्म को ध्रुव तारे के समान बताया। उन्होंने अपनी वाणी में कहा कि पानी के जीव भी जीव रक्षा में आते हैं उनको मारने से पाप लगता है। सभा के सदस्यों व अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष अनिल धारणियां द्वारा स्वामी जी व मुख्य अतिथि ने जाम्भाणी साहित्य, शिक्षा, खेलकूद, जीव रक्षा में अग्रणी स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इसके बाद आए सभी अतिथियों को शाल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। अगले दिन सुबह सोमराज पुजारी ने हवन कर कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया।

इन्द्रजीत धारणियां
सचिव, बिश्नोई सभा, डबवाली

बरजत मारे जीव तहां मर जाइये

अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के पंजाब प्रदेशाध्यक्ष श्री आर.डी. बिश्नोई 12 सितम्बर, 2015 को कहीं जा रहे थे। अमावस्या का समय था, जाम्भाणी धर्म परायण श्री आर.डी. विष्णु-विष्णु का जप कर रहे थे तभी इनके फोन की घंटी बजी और समाचार मिला कि रायपुरा गांव के पास कुछ शिकारी लोग शिकार कर रहे हैं, इन्होंने तुरंत वन्य जीव संरक्षण विभाग और अन्य लोगों को सूचित किया तथा स्वयं अकेले ही उस ओर चल पड़े। जब शिकारियों ने इन्हें आते देखा तो वे भाग खड़े हुए इन्होंने अपनी गाड़ी शिकारियों के पीछे लगा दी, आगे जाकर कच्चे मार्ग में शिकारियों की गाड़ी रूक गई, वे तीनों हथियार लिये हुए थे और ये अकेले निहत्थे थे।

शिकारियों ने इनके ऊपर हवाई फायर किये और इन्हें डराने की कोशिश की, इन्होंने शिकारियों के सामने छाती तान दी कि इन वन्य जीवों को नहीं मारने दूँगा। इन्होंने झपट्टा मारकर एक शिकारी का पिस्तौल छीन लिया और उसे नीचे गिरा लिया, उसके साथ इनका पन्द्रह मिनट तक मल्लयुद्ध होता रहा। इस बीच दूसरे शिकारी ने इन पर सीधे तीन बार फायर किये पर सौभाग्य से ये बचते रहे, इन्होंने बताया कि ना तो मैंने विष्णु का जाप छोड़ा और ना ही उस शिकारी को छोड़ा, मुझे प्रत्यक्ष लग रहा था कि कि आज किसी हालत में बचना मुश्किल है पर डर बिल्कुल नहीं लग रहा था, बल्कि उन तीन आदमियों से अकेले लड़ते हुए ऐसी हिम्मत आ गई थी कि उन तीनों पर अकेला बिना हथियार ही भारी पड़ रहा था। आसपास के खेतों में काम करने वाले लोगों ने भी बाद में बताया कि हमने ऐसा दृश्य केवल फिल्मों में ही देखा था। श्री आर.डी. बिश्नोई ने शिकारियों के साथ जूझते बीस मिनट निकल गए तब जीव रक्षा विभाग और दूसरे लोगों की गाड़ियाँ आती देखकर शिकारी अपनी गाड़ी और हथियार वहीं छोड़ कर भाग गए। विभाग और पुलिस ने इनको अपने कब्जे में ले लिया। सर्वत्र श्री बिश्नोई के साहस की प्रशंसा होने लगी। वन्य जीवों की रक्षा की बात हो या गोरक्षा आर. डी. बिश्नोई दिन-रात सक्रिय रहते हैं। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के सख्ती से लागू होने के बावजूद भी शिकारी कितने दु:साहस के साथ शिकार करते हैं और बिश्नोइयों को जान पर खेलकर इन जीवों की रक्षा करनी पड़ती है। क्या हम आज भी राजा -महाराजा और सामन्ती युग में जी रहे हैं? क्या बिश्नोइयों के अलावा दूसरे लोग खासकर इन जीवों को मारकर अपना पेट भरने वाले इन जीव हत्यारों का फर्ज नहीं बनता की विलुप्त होती इन प्रजातियों को अगर हमने नहीं बचाया तो कल आने वाली पीढ़ी इन जीवों के चित्र केवल किताबों में ही देखेगी और इन शिकारियों की तरह ही खतरनाक हैं कुत्ते जो इन जीवों के खात्मे में बहुत बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। जाने-अनजाने में खेतों की सुरक्षा में लगे ब्लेड वाले तार भी इन जीवों के लिये जानलेवा साबित हो रहे हैं। बड़े ही शर्म की बात है कि धरती के सबसे समझदार प्राणी-मनुष्य की नासमझी के कारण जीवों की हजारों प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं और बची हुई अपने अस्तित्व के लिये जूझ रही हैं। साधुवाद के पात्र आर. डी. बिश्नोई जिन्होंने इस जाम्भाणी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इन मासूम, निरीह वन्यजीवों के लिये अपनी जान की परवाह न करते हुए शिकारियों से लोहा लिया। बिश्नोई सभा पंजाब के प्रधान श्री गंगाबिशन जी भादू ने समाज के गणमान्य लोगों की मौजूदगी में बिश्नोई मन्दिर, अबोहर में आर.डी. बिश्नोई के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बिश्नोई समाज के वन्यजीव और पर्यावरण संरक्षण के अभियान को और तेज करने पर बल दिया ताकि इस धरती पर सभी जीव स्वच्छंद और निर्भयता से विचरण कर सके।

-विनोद जम्भदास

हिम्मतपुरा, तह. अबोहर, जि. फाजिल्का (पंजाब)

जयपुर में जम्भ जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न

जयपुर में गुरु जम्भेश्वर महाराज का 565वां अवतार दिवस, बिश्नोई धर्मशाला, नजदीक सिविल लाइन मेट्रो स्टेशन, अजमेर रोड, सोडाला में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न प्रान्तों व जिलों के प्रवासी बिश्नोइयों भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 5 सितम्बर को रात्री जागरण हुआ। 6 सितम्बर को सुबह पाहल व हवन का कार्यक्रम हुआ। उसके बाद प्रसादी का आयोजन किया गया। समारोह में लालचंद भादू सेवानिवृत न्यायधीश, रामकरण सेवानिवृत D.T.O., कालूराम जी सेवानिवृत R.A.S., प्रेमसुख जी R.A.S., सत्यपाल जी गोदरा, अनिल जी बोला, तुलसीराम मांझू, हेतराम गोदारा, सुभाष जी बागडिया, कैलाश जी बिश्नोई I.P.S., सुनिल बिश्नोई I.P.S. सहित समाज के प्रबुद्धवर्ग ने हिस्सा लिया।

-डॉ. सत्यपाल बिश्नोई, जयपुर

जम्भ-चालीसा

केशरिया वस्त्र धारियों, आयो सृष्टि पालन हार।
29 नियमों की पगंडडी, दूर कराये अधर्म अंधकार।
जम्भ सागर के प्रकाश से, मिटे जात-पात सभी अंहकार।
वंदना करू मैं दिन-रात, ॐ गुरु मोहे विष्णु अवतार।

जय हो निराकर अविनाशी की।
नगरी समराथल हो या काशी की॥
भगवान कोप करे न कलह करे।
आ स्वर्ग भक्तों का उद्धार करे॥
जब पवन न सूरज पानी था।
सून्य लोक में इक जानी था॥
कुटुम्ब न कोई भाई-बाप थे।
अदित्य जम्भो अपने में आप थे॥
हो भगवान तुम सर्व देवन के।
कष्ट हरो हम "हरि" भक्तन के॥
बिन भक्ति तेरी सब मुरदार।
छमा करो अब करो उद्धार॥
आदि-अनादि सब तुम्हीं रचो।
ऐसा कौन जो तुम्हें रचो॥
राम-कृष्ण सब तेरे अवतार।
सुनो पुकार-सुनो पुकार॥
हृदय भीतर तुम्हीं समाए।
चीर के हम ये किसे दिखाए॥
त्रेता में श्री राम कहलायो।
मिल भक्तों संग अधर्म मिटायो॥
भक्तों में भक्त हनु ब्रह्मचारी।
कलयुग में जा खुद लाज सवारी॥
अमंगल हटे उस भक्त के सारे।
व्रत रखे जो मंगल तुम्हारे॥
श्रद्धा रूप में शक्ति तुम्हारी।
ॐ जय गुरुवर ब्रह्मचारी॥
द्वापर में आ लाछ लाज बचाई।
अहंकारियों ने महाभारत कराई॥
कलयुग में लियो जम्भावतार।
देवगण भी आयो ले उपहार॥
देख तेज को मरुधरा जागी।
भूत-प्रेतों की टोली भागी॥
ग्वाल-बाल संग लीला रचाई।
धन कुबेर भक्तों में उड़ाई॥
जा पहुँचे समराथल धोरा।
गढ़ने मन दुनिया का कोरा॥
देख पुल्हा समराथल आयो।
स्वर्ग नगरी में खूब घुमायो॥
इय न अल्सी कोई तेल लगाया।
मधुर सुगंध योगा से जगाया॥
जय-जय-जय गुरु अंतर यामी।
दूर करो हम सबकी खामी॥
नतमस्तक हो दूदा शरणागत आया।
कैर की काढ से राज दिलाया॥
सुखमय जीवन उसने करा।
जिसने नियम धर्म का पालन धरा॥
वेद-पुराण सब गाते गाथा।
हो सृष्टि स्वयं विधाता॥
बन कलयुग में पर्यावरण पहरी।
छाप छोड़ गये अपनी गहरी॥
रंक राजा आ चर्णोशीश झुकाते।
ईष्ट देव अपन तुम्हें बताते॥
साज-सज्जा न मन को भावे।
यज्ञ करे जो विष्णु घर आवे॥
संग में मय्या लक्ष्मी आती।
खुशियों का संसार दिखाती॥
भूल हुई भगवन दया करो।
चरणों में पड़ गए हम नजर करो॥
तुम बिन गाथा यज्ञ अधूरे।
त्रिदेवों में देव हो पूरे॥
जिस युग भक्त तुम्हें पुकारे।
ले अवतार संकट से उबारे॥
फल दायक महा मंत्र तुम्हारा।
रिद्धि-सिद्धि से उपजा सारा॥
जिधर देखूं तुम्हीं विराजे।
सकल सृष्टि में स्वयं ही साजे॥
भक्त प्रह्लाद तुमने उबारा।
हमसे क्यों करते हो किनारा॥
कंठी माला न तिलक लगाया।
29 नियमों का घोटन पिलाया॥
इन्द्र बिन ककहेड़ी लहराये।
गर दृष्टि गुरुवर पड़ जाये॥
स्नेह दया की दृष्टि रखियो।
गर्व से हमें बचाते रहियो॥
मन हृदय जो जपे चालीसा।
मिटे कलह बने सिद्धगोरीसा॥

श्रद्धा सुमन सिद्ध चालीसा,
नित नेम पढे जो कोई।
रसमय जीवन होत है,
तापर जम्भो कृपा होई।

हरिओम बिश्नोई
गुरुद्वारा रोड, नई बस्ती, बिजनौर (यू.पी)
मो. 9012339705, 9917610327

मुख्य अष्ट धाम

उन्नतीस धर्म नियम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072 आसोज की अमावस्या

लगेगी : 11.10.2015, रविवार, रात्रि 3.00 बजे

उतरेगी : 12.10.2015, सोमवार, रात्रि 5.28 बजे (मंगलवार सूर्योदय से पूर्व)

विक्रमी सम्वत् 2072 कार्तिक की अमावस्या

लगेगी : 10.11.2015, वार मंगलवार, रात्रि 9.22 बजे

उतरेगी : 11.11.2015, बुधवार, रात्रि 11.16 बजे

विक्रमी सम्वत् 2072 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी : 10.12.2015, गुरुवार, अपराह्न 3.24 बजे

उतरेगी : 11.12.2015, शुक्रवार, अपराह्न 3.59 बजे

प्रमुख मेले व पर्व

आसोज अमावस्या मेला : मुकाम, पींपासर, सम्भराथल, कांठ, लोहावट, सोनड़ी, मेघावा, भीयांसर, सोमवार 12.10.2015

धर्म स्थापना दिवस: संभराथल, दिल्ली, अबोहर, मंगलवार 3.11.2015

पुजारी : बनवारी लाल सोढ़ा, (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

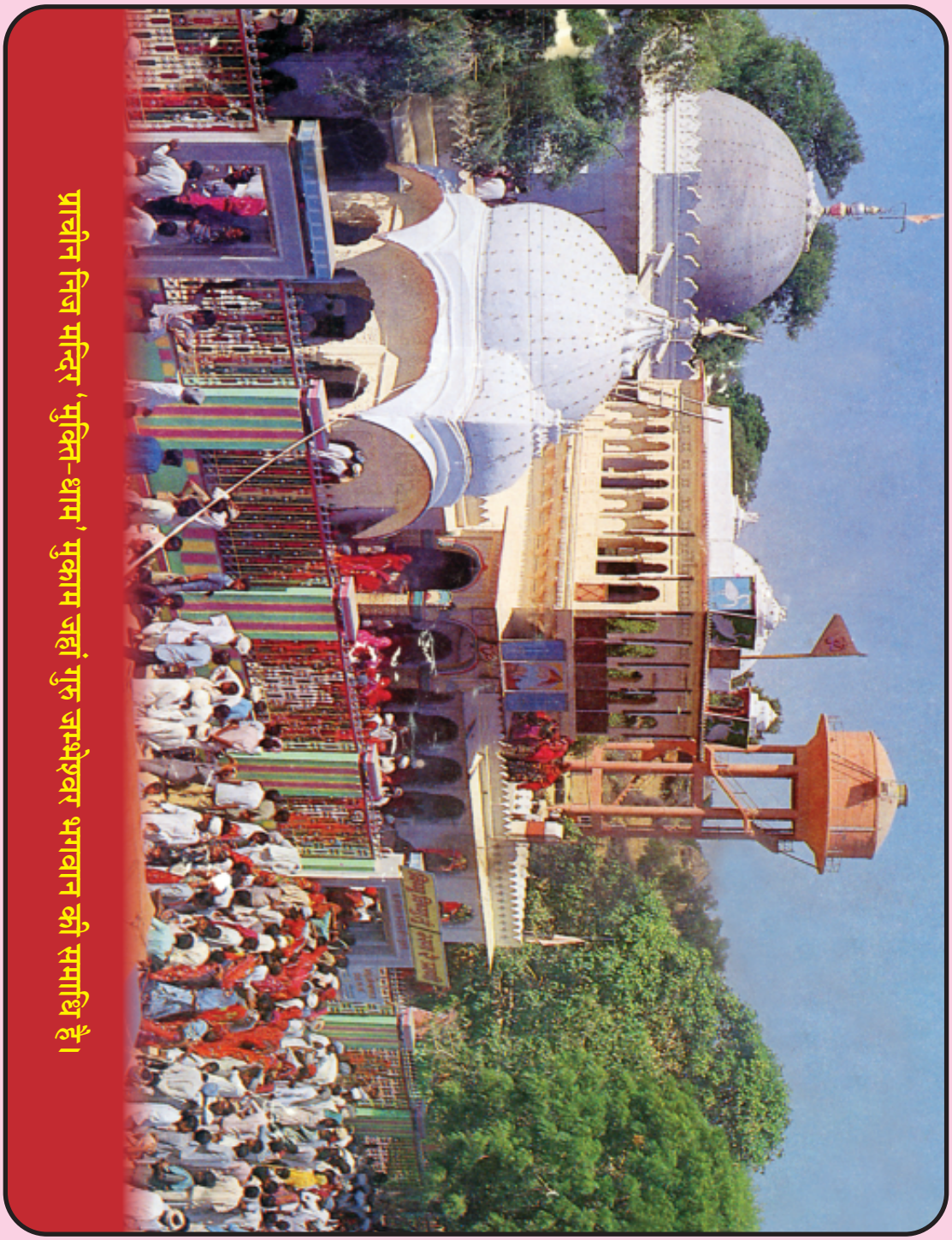

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अक्तूबर, 2015 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।